बिहारी
के सात सौ तेरह दोहे एवं सोरठा

(दोहा)

मेरी भव – वाधा हरौ , राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित–दुति होय ॥१॥

अपने अँग के जानि कै जोबन – नृपति प्रबीन ।
स्तन, मन, नैन, नितंब की बड़ौ इजाफा कीन ॥२॥

अर तैं टरत न बर–परे , दई मरक मनु मैन ।
होड़ा होड़ी बढ़ि चले चितु, चतुराई, नैन ॥३॥

औरै – ओष कनीनिकनु गनी घनी – सिरताज ।
मन धनी के नेह की बनीं छनीं पट लाज ॥४॥

सनि–कज्जल चख–झख–लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु ।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सबु देहु ॥५॥

सालति है नटसाल सी, क्यौं हूँ निकसति नाँहि ।
मनमथ–नेजा–नोक सी खुभी खुभी जिय माँहि ॥६॥

जुवति जोन्ह मैं मिलि गई, नैंक न होति लखाइ ।
सौंधे कैं डोरैं लगी अली चली सँग जाइ ॥७॥

हौं रीझी, लखि रीझिहौ छबिहिं छबीले लाल ।
सोनजुही सी ह्वोति दुति–मिलत मालती माल ॥८॥

बहके, सब जिय की कहत, ठौरु कुठौरु लखैं न ।
छिन औरै, छिन और से, ए छबि छाके नैन ॥९॥

फिरि–फिरि चितु उत हीं रहतु , टूटी लाज की लाव ।
अंग–अंग–छबि–झौंर मैं भयौ भौंर की नाव ॥१०॥

नीकी लागि अनाकनी, फीकी परी गोहारि ।
तज्यौ मनौ तारन–बिरदु बारक बारनु तारि ॥११॥

चितई ललचौहैं चखनु डटि घूँघट–पट माँह ।
छल सौं चली छुवाइ कै छिनकु छबीली छाँह ॥१२॥

जोग–जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन ।
चाहत पिय–अद्वैतता काननु सेवत नैन ॥१३॥

खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बानि ।
आक–कली न रली करै अली,अली जिय जानि ॥१४॥

पिय–बिछुरन कौ दुसहु दुखु, हरषु जात प्यौसार ।
दुरजोधन लौं देखियति तजत प्रान इहि बार ॥१५॥

झीनैं पट मैं झुलमुली झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सपल्लव डार ॥१६॥

डारे ठोड़ी – गाड़ , गहि नैन – बटोही, मारि ।
चिलक–चौंध मैं रूप–ठग, हाँसी–फाँसी डारि ॥१७॥

कीनैं हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु ।
भो मन मोहन–रूपु मिलि पानी मैं कौ लौनु ॥१८॥

लाग्यो सुमनु ह्वै है सफलु आतप–रोसु निवारि ।
बारी, बारी आपनी सींचि सुहृदता–बारि ॥१९॥

अजौ तर्‌यौना ही रह्यौ श्रुति सेवत इक–रंग ।
नाक–बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतनु कैं संग ॥२०॥

जम–करि–मुँह–तरहरि पर्‌यौ, इहिं धरहरि चित लाउ ।
बिषय–तृषा परिहरि अजौं नरहरि के गुन गाउ ॥२१॥

पलनु पीक , अंजनु अधर , धरे महावरु भाल ।
आजु मिले सु भली करी, भले बने हौ लाल ॥२२॥

लाज – गरब – आलस – उमग – भरै नैन मुसकात ।
राति–रमी रति देति कहि औरै प्रभा प्रभात ॥२३॥

पति रति की बतियाँ कहीं, सखी लखी मुसकाइ ।
कै कै सबै टलाटली, अली चली सुखु पाइ ॥२४॥

तो पर वारौं उरबासी, सुनि राधिके सुजान ।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान ॥२५॥

कुच-गिरि चढ़ि, अति थकित ह्वै, चली डीठि मुँह-चाइ ।
फिरि न टरी, परियै रही, गिरी चिबुक की गाड़ ॥२६॥

बेधक अनियारे नयन , बेधत करि न निषेधु ।
बरबबट बेधतु मो हियौ तो नासा कौ बेधु ॥२७॥

लौनैं मुहुँ दीठि न लगै, यौं कहि दीनौ ईठि ।
दूनी ह्वै लागन लगी, दियैं दिठौना, दीठि ॥२८॥

चितवनि रूखे दृगनु की, हाँसी-बिनु मुसकानि ।
मानु जनायौ मानिनी, जानि लियौ पिय, जानि ॥२९॥

सब ही त्यौं समुहति छिनु , चलति सबनु दै पीठि ।
वाही त्यौं ठहराति यह, कविलनवी लौं, दीठि ॥३०॥

कौन भाँति रहिहै बिरदु अब देखिवी, मुरारि ।
बीधे मोसौं आइ कै गीधे गीधहिं तारि ॥३१॥

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत खिलत लजियात ।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु हीं सब बात ॥३२॥

वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाइ ।
लपट बुझावत बिरह की कपट-भरेऊ आइ ॥३३॥

लखि गुरुजन-विच कमल सौं सीसु छुवायौ स्याम ।
हरि-सनमुख करि आरसी हियैं लगाई बाम ॥३४॥

पाइ महावर दैंन कौं नाइनि बैठी आइ ।
फिरि-फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ ॥३५॥

तोही, निरमोही, लग्यौ मो ही इहैं सुभाउ ।
अनआऐं आवै नहीं, आऐं आवतु आउ ॥३६॥

नेहु न, नैननु, कौं कछू उपजी बड़ी बलाइ ।
नीर–भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ ॥३७॥

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल ।
अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल ॥३८॥

लाल तुम्हारे विरह की अगनि अनूप, अपार ।
सरसै बरसैं नीर हूँ, झर हूँ मिटै न झार ॥३९॥

देह दुलहिया की बढ़ै ज्यौं – ज्यौं जोबन – जोति ।
त्यौं–त्यौं लखि सौत्यैं सबैं बदन मलिन दुति होति ॥४०॥

जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि ।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि ॥४१॥

(सोरठा)

मंगल बिंदु सुरंगु , मुखु ससि, केसरि आड़ गुरु ।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन–जगत ॥४२॥

(दोहा)

पिय तिय सौं हँसि कै कह्यौ, लखैं दिठौना दीन ।
चंदमुखी, मुखचंदु तैं भलौ चंद–समु कीन ॥४३॥

कौंहर सी एड़ीनु की लाली देखि सुभाइ ।
पाइ महावरु देइ को आपु भई बे पाइ ॥४४॥

खेलन सिखए , अलि, भलैं चतुर अहेरी मार ।
कानन–चारी नैन–मृग नागर नरनु सिकार ॥४५॥

रससिंगार–मंजनु किए , कंजनु भंजनु दैन ।
अंजनु रंजनु हूँ बिना खंजनु गंजनु, नैन ॥४६॥

साजे मोहन–मोह कौं, मोहीं करत कुचैन ।
कहा करौं, उलटे परे टोने लोने नैन ॥४७॥

याकैं उर औरै कछू लगी बिरह की लाइ ।
पजरै नीर गुलाब कैं , पिय की बात बुझाइ ॥४८॥

कहा लेहुगे खेल पैं, तजौ अटपटी बात ।
नैंक हँसौंही हैं भई भौहैं, सौहैं खात ॥४९॥

डारी सारी नील की ओट अचूक, चुकैंन ।
मो मन–मृगु करबर गहैं अहै! अहेरी नैन ॥५०॥

दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईंहिं न भूलि ।
दई दई क्यौं करतु है, दई दई सु कबूलि ॥५१॥

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन–तन माँह ।
देखि दुपहारी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह ॥५२॥

हा हा! बदनु उघारि, दृग सफल करैं सबु कोइ ।
रोज सरोजनु कैं परै, हँसी ससी की होइ ॥५३॥

होमति सुखु, करि कामना तुमहिं मिलन की, लाल ।
ज्वालामुखी सी जरति लखि लगनि–अगनि की ज्वाल ॥५४॥

सायक–सम मायक नयन, रँगे त्रिबिध रँग गात ।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जलजात लजात ॥५५॥

मरी डरी कि टरी बिथा, कहा, खरी, चलि चाहि ।
रही कराहि कराहि अति, अब मुँह आहि न आहि ॥५६॥

कहा भयौ, जौ बीछुरे , मो मनु तोमन–साथ ।
उड़ी जाउ कित हूँ , तऊ गुड़ी उड़ाइक हाथ ॥५७॥

लखि लोने लोइननु कैं , कौइनु , होई न आजु ।
कौनु गरीबु निवाजिबौ, कित तूठ्यौं रतिराजु ॥५८॥

सीतलताऊरु सुबास कौ घटै न महिमा–मूरु ।
पीनस वारैं जौ तज्यौ सोरा जानि कपरु ॥५९॥

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात ।
कहिहै सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ॥६०॥

बंधु भए का दीन के, को तार्‌यौ रधुराइ ।
तूठे तूठे फिरत हौ झूठे बिरद कहाइ ॥६१॥

जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जाँहि ।
आँखिनु आँखि लगी रहैं आँखें लागति नाँहि ॥६२॥

कौन सुनै, कासौं कहौं , सुरति बिसारी नाह ।
बदाबदी ज्यौ लेत हैंए बदरा बदराह ॥६३॥

मैं हो जान्यौ, लोइननु जुरत बाढ़िहै जोति ।
को हो जानतु, दीठि कौं दीठि किरकिटी होति ॥६४॥

गहकि, गाँसु औरै गहैं, रहे अधकहे बैन ।
देखि खिसौं हैं पिय–नयन किए रिसौं हैं नैन ॥६५॥

मैं तोसौं कैवा कह्यौ, तू जिन इन्हैं पत्याइ ।
लगालगी करि लोइननु उर मैं लाई लाइ ॥६६॥

बर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न ।
हरिनी के नैनानु तैं, हरि, नीके ए नैन ॥६७॥

थोरैं ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि ।
तुमहूँ , कान्ह, मनौ भए आजकाल्हि के दानि ॥६८॥

अंग–अंग–नग जगमगत दीपसिखा–सी देह ।
दिया बढाऐं हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह ॥६९॥

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग ।
दीपत देह दुहून मिलि दिपति तापता–रंग ॥७०॥

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ ।
तुमहूँ लागी जगत–गुरु, जग–नाइक जग–बाइ ॥७१॥

सकुचि न रहियै, स्याम, सुनि ए सतरौहैं बैन ।
देत रचौंहौं चित कहे नेह–नैचौहैं नैन ॥७२॥

पत्रा हीं तिथि पाइयै, वा घर कैं चहुँ पास ।
नितप्रति पून्यौई रहै, आनन–ओप–उजास ॥७३॥

बसि सकोच–दसबदन–बस, साँचु दिखावति बाल ।
सियलौं सोधति तिय तनहिं लगनि–अगनि की ज्वाल ॥७४॥

जौ न जुगति पिय मिलन की, धूरि मुकति मुँह दीन ।
जौ लहियै सँग सजन, तौ धरक नरक हूँ कीन ॥७५॥

चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि ।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति अति हानि ॥७६॥

मोहूँ सौं तजि माहु, दृग चले लागि उहिं गैल ।
छिनकु छ्वाइ छबि–गुर–डरी छले छबीलैं छैल ॥७७॥

कंज–नयनि मंजनु किए, बैठी ब्यौरति बार ।
कच–अँगुरी–बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार ॥७८॥

पावक सो नयननु लगै जावकु लाग्यौ भाल ।
मुकुरु होहुगे नैंक मैं, मुकुरु बिलौकौ, लाल ॥७९॥

रहति न रन, जयसाहि–मुख लखि, लाखनु की फौज ।
जाँचि निराखर ऊ चलै लै लाखनु की मौज ॥८०॥

दियौ, सु सीस चढ़ाइ लै आछी भाँति अएरि ।
जापैं सुखु चाहतु लियौ, ताके दुखहिं न फेरि ॥८१॥

तरिवन–कनकु कपोल–दुति बिच बीच हीं बिकान ।
लाल लाल चमकतिं चुनीं चौका चीन्ह–समान ॥८२॥

मोहि दयौ, मेरी भयौ, रहतु जु मिलि जिय साथ ।
सो मनु बाँधि न सौं पियै, पिय, सौतिनि कैं हाथ ॥८३॥

कंजु–भवनु तजि भवन कौं चलियै नंदकिसोर ।
फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर ॥८४॥

कहति न देवर की कुबत कुल–तिय कलह डराति ।
पंजर–गत मंजार–ढिग सुक जयौं सूकति जाति ॥८५॥

औरै भाँति भए ञब ए चौसरु, चंदनु , चंदु ।
पति–बिनु अति पारतु बिपति मारुतु मंदु ॥८६॥

चलन ना पावतु निगम–मगु जगु, उपज्यौ अति त्रासु ।
कुच–उतंग गिरिबर गह्यौ मैना मैनु मवासु ॥८७॥

त्रिबली, नाभि दिखाइ, कर सिर ढकि, सकुचि, समाहि ।
गली, अली की ओट कै , चली भली बिधि चाहि ॥८८॥

देखत वुरै कपूर ज्यौं उपै जाइ जिन, लाल ।
छिन छिन जाति परी खरी छीन छबीली बाल ॥८९॥

हँसि उतारि हिय तैं दई तुम जु तिहिं दिना, लाल ।
राखति प्रान कपूर ज्यौं, वहै चुहुटिनी–माल ॥९०॥

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार ।
मो संपति जदुपति सदा बिपति–बिदारनहार ॥९१॥

द्वैज–सुधादीधिति–कला वह लखि, दीठि लगाइ ।
मनौ अकास–अगस्तिया एकै कली लखाइ ॥९२॥

गदराने तन गोरटी, एंपन–आड़ लिलार ।
हूठ्यौ दै , इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार ॥९३॥

तंत्री–नाद , कबित्त–रस , सरस राग , रति–रंग ।
अनबूड़े बूड़े , तरे जे बूड़े सब अंग ॥९४॥

सहज सचिक्कन, स्याम–रुचि, सुचि, सुगंध, सुकुमार ।
गनतु न मनु पथु अपथु, लखि बिथुरे सुथरे बार ॥९५॥

सुदुति दुराई दुरति नहिं, प्रगट करति रति–रूप ।
छुटैं पीक , औरै उठी लाली ओठ अनूप ॥९६॥

वेई गड़ि गाड़ैं परीं, उपट्यौ हारु हियैं न ।
आन्यौ मोरि मतंगु मनु मारि गुरेरनु मैन ॥९७॥

नैंक न झुरसी बिरह–झर नेह–लता कुम्हिलाति ।
नित नित होति हरी हरी, खरी झालरति जाति ॥९८॥

हेरि हिंडोरैं गगन तैं परी परी सी टूटि ।
धरी धाइ पिय बीच हीं, करी खरी रस लूटि ॥९९॥

नैंक हँसौंहीं बानि तजि, लख्यौ परतु मुहूँ नीठि ।
चौका–चनकनि–चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि ॥१००॥

प्रगट भए द्विजराज–कुल, सुबस बसे ब्रज आइ ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ ॥१०१॥

केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपकु कितकु अनुपु ।
गात–रूप लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूपु ॥१०२॥

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान ।
धर्‌यौ मनौ हिय–धर समरु, ड्यौढ़ी लसत निसान ॥१०३॥

खौरि–पनिय भृकुटी–धनुषु बधिकु समरु, तजि कानि ।
हनतु तरुन–मृग तिलक –सर सुरक – भाल, भरि तानि ॥१०४॥

नीकौ लसतु लिलार पर टीकौ जरितु जराइ ।
छबिहिं बढ़ावतु रबि मनौ ससि–मंडल मैं आइ ॥१०५॥

लसतु सेतसारी ढप्यौ, तरल तर्‌यौना कान ।
पर्‌यौ मनौ सुरसरि–सलिल रबि–प्रतिबिंदु बिहान ॥१०६॥

हम हारीं कै कै हहा, पाइनु पार्‌यौ प्यौर ।
लेहु कहा अजहूँ किए तेह–तरैर्‌यौ त्यौर ॥१०७॥

सतर भौंह, रूखे बचन, करति कठिनु मनु नीठि ।
कहा करौं, ह्वै जाति हरि हेरि हँसौं हीं डीठि ॥१०८॥

वाहि लखैं लोइन लगै कौन जुवति की जोति ।
जाकैं तन की छाँह–ढिग जोन्ह छाँह सी होति ॥१०९॥

कहा कहौं वाकी दसा, हरि प्राननु के ईस ।
बिरह–ज्वाल जरिबो लखैं मरिबौ भई असीस ॥११०॥

जेति संपति कृपन कैं तेती सूमति जोर ।
बढ़त जात ज्यौं ज्यों उरज, त्यौं त्यौं होत कठोर ।१११॥

ज्यों ज्यों जोबन–जेठ दिन कुच मिति अति अधिकाति ।
त्यौं त्यौं छिन छिन कटि–छपा छीन परति नित जाति ॥११२॥

तेह–तरेरौ त्यौरु करि कत करियत दृग लोल ।
लीक नहीं यह पीक की, श्रुति–मन झलक कपोल ॥११३॥

नैंक न जानी परति, यौं पर्‌यौ बिरह तनु छामु ।
उठति दियैं लौं नाँदि, हरि, लियैं तिहारौ नामु ॥११४॥

नभ–लाली चाली निसा, चटकाली धुनि कीन ।
रति पाली, आली, अनत, आए बनमाली न ॥११५॥

सोवत सपनैं स्यामघनु मिलिहिलि हरत वियोगु ।
तब हीं टरि कित हूँ गई, नींदौ नींदनु जोगु ॥११६॥

संपति केस सुदेस नर नवत, दुहुनि इक बानि ।
बिभव सतर कुच, नीच नर, नरम बिभव की हानि ॥११७॥

कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन पखानु ।
नतरुक कन इन बिय लगत उपजातु बिरह–कृसानु ॥११८॥

हरि हरि ! बरि बरि उठति, करि करि थकी उपाइ ।
वाकौ जुरु, बलि बैद, जौ तो रस जाइ, तु जाइ ॥११९॥

यह बिनुसुत नगु राखि कै जगत बड़ौ जसु लेहु ।
जरी विषम जुर जाइयैं आइ सुदरसनु देहु ॥१२०॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यौं–ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं–त्यौं उज्जलु होइ ॥१२१॥

बिय सौतिनु देखत दई अपने हिय तैं, लाल ।
फिरति सबनु मैं डहडही उहैं मरगजी माल ॥१२२॥

छला छबीले लाल को, नवल नेह लहि नारि ।
चूँबति, चाहति, लाइ उर पहिरति, धरति उतारि ॥१२३॥

नित संसौ हंसौ बचतु, मनौ सु इहिं अनुमानु ।
विरह–अगिनि–लपटनु सकलु झपटि न मीचु–सचानु ॥१२४॥

थाकी जतन अनेक करि , नैंक न छाड़ति गैल ।
करी खरी दुबरी सु लगि तेरी चाह–चुरैल ॥१२५॥

लाज गहौ, बेकाज कत घेरि रहे, घर जाँहि ।
गोरसु चाहत फिरत हौ, गोरसु चाहत नाँहि ॥१२६॥

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि–पुंज ।
जमुना–तीर तमाल–तरु–मिलित मालती–कुंज ॥१२७॥

उन हरकी हँसी कै, इतै इन सौंपि मुसकाइ ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ ॥१२८॥

पर्‌यौ जोरु, बिपरिति रति रुपी सुरत–रन–धीर ।
करति कुलाहलु किंकिनी, गह्यौ मौनु मंजीर ॥१२९॥

बिनती रति बिपरीति की करी परसि पिय पाइ ।
हँसि, अनबोलैं हीं दियौ ऊतरु, दियौ बताइ ॥१३०॥

कैंसें छोटे नरनु तैं सरत बड़नु के काम ।
मढयौ दमामौ जातु क्यौं, कहि चूहे कैं चाम ॥१३१॥

सकत न तुव ताते बचन मो रस कौ रसु खोइ ।
खिन खिन औटे खीर लौं खरौ सवादिलु होइ ॥१३२॥

कहि, लहि कौन सकै दुरी सौनजाइ मैं जाइ ।
तन की सहज सुबास बन देती जौ न बताइ ॥१३३॥

चाले की बातैं चलीं, सुनत सखिनु कैं टोल ।
गोएँ हूँ लोइन हँसत, बिहसत जात कपोल ॥१३४॥

सनु सूक्यो, बीत्यौ बनौ, ऊखौ लई उखारि ।
हरी हरी अरहरि अजैं, धरि धरिहरि जिय, नारि ॥१३५॥

आए आपु , भली करी , मेटन मान–मरोर ।
दूरि करौ यह , देखिहै छला छिगुनिया–छोर ॥१३६॥

मेरे बूझत बात तू कत बहरावति, बाल ।
जग जानी बिपरीत रति लखि बिंदुली पिय–भाल ॥१३७॥

फिरि फिरि बिलखी ह्वै लखति, फिरि फिरि लेति उसासु ।
साई ! सिर–कच–सेत लौं बीत्यौ चुनति कपासु ॥१३८॥

डगकु डगति सी चलि, ठठुकि चितई, चली निहारि ।
लिए जाति चितु चोरटी वहै गोरटी नारि ॥१३९॥

करी बिरह ऐसी, तऊ गैल नै छाड़तु नीचु ।
दीनैं हूँ चमसा चखनु चाहै लहै न मीचु ॥१४०॥

जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु ।
मन–काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु ॥१४१॥

जौ वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आपु ।
तौ बलि, नैंक बिलोकियै चलि अचकाँ, चुपचापु ॥१४२॥

जटिल नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनौ अली चंपक–कली बसि रसु लेतु निसाँक ॥१४३॥

फेरु कछुक करि पौरि तैं, फिरि, चितई मुसुकाइ ।
आई जावनु लैन, जिय नेहैं चली जमाइ ॥१४४॥

जदपि तेजरौहाल–बल पलकौ लगी न बार ।
तौ ग्वैंड़ौ घर का भयौ पैंड़ौ कोस हजार ॥१४५॥

पूस–मास सुनि सखिनु पैं साईं चलत सवारु ।
गहि कर बीन प्रबीन तिय राग्यौ रागु मलारु ॥१४६॥

बन–तन कौं, निकसत, लसत हँसत हँसत, इत आइ ।
दृग–खंजन गहि लै चल्यौ चितवनि–चैंपु लगाइ ॥१४७॥

मरनु भलौ वरु बिरह तैं, यह निहचय करि जोइ ।
मरन मिटै दुखु एक कौ, बिरह दुहूँ दुखु होइ ॥१४८॥

हरषि न बोली, लखि ललनु, निरखि अमिलु सँग साथु ।
आँखिनु हीं में हँसि, धर्‌यो सीस हियैं धरि हाथु ॥१४९॥

को जानै, ह्वैहै कहा, ब्रज उपजी अति आगि ।
मन लागै नैननु लगैं, चलै न मग लगि लागि ॥१५०॥

घरु घरु डोलत दीन ह्वै, जनु जनु जाचतु जाइ ।
दियैं लोभ चसमा चखनु लघु पुनि बड़ौ लखाइ ॥१५१॥

लै चुभकी चलि जाति जित जित जल–केलि–अधीर ।
कीजत केसर–नीर से तित तित के सरि–नीर ॥१५२॥

छिरके नाह नबोढ़–दृग कर–पिजकी–जल–जोर ।
रोचन–रँग–लाली भई बियतिय–लोचन–कोर ॥१५३॥

कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल ।
कहुँ मुरली, कहुँ पीत पटु, कहुँ मुकुट बनमाल ॥१५४॥

राधा हरि, हरि राधिका बनि आए संकेत ।
दंपति रति–बिपरीत–सुखु सहज सुरतहूँ लेत ॥१५५॥

चलत पाइ निगुनी गुनी धनु मनि–मुत्तिय–माल ।
भेंट होत जयसाहि सौं भागु चाहियतु भाल ॥१५६॥

जसु अपजसु देखत नहीं देखत साँवल–गात ।
कहा करौं, लालच–भरे चपल नैन चलि जात ॥१५७॥

नख–सिख–रूप भरे खरे, तौ माँगत मुसकानि ।
तजत न लोचन लालची ए ललचौहीं बानि ॥१५८॥

छ्वै छिगुनी पहुँची गिलत अति दीनता दिखाइ ।
बलि बावन कौ ब्यौंतु सुनि को, बलि, तुन्हैं पत्याइ ॥१५९॥

नैना नैंक न मानहीं, कितौ कह्यौ समुझाय ।
तनु मनु हारैं हूँ हँसैं, तिन सौं कहा बसाइ ॥१६०॥

मोहन–मूरति स्याम की अति अद्‌भुत गति जोइ ।
बसतु सु चित–अन्तर, तऊ प्रतिबिंबितु जग होइ ॥१६१॥

लटकि लटकि लटकतु चलतु , डटतु मुकुट की छाँह ।
चटक–भर्‌यौ नटु मिलि गयौ अटक भटक माँह ॥१६२॥

मलिन देह, वेई बसन, मलिन बिरह कैं रूप ।
पिय–आगम औरै चढ़ी आनन ओप अनूप ॥१६३॥

रँगराती रातैं हियैं प्रियतम लिखी वनाइ ।
पाती काती बिरह की छाती रही लगाइ ॥१६४॥

लाल, अलौलिक लरिकई लखि लखि सखी सिहाँति ।
आजगाल्हि मैं देखियतु उर उकसौंहीं भाँति ॥१६५॥

बिलखी डभकौं हैं चखनु तिय लखि, गवनु बराइ ।
पिय गहबरि आऐं गरैं राखी गरैं लगाइ ॥१६६॥

प्रतिबिंबित जयसाहि दुति दीपति दरपन–धाम ।
सबु जगु जीतन कौं कर्‌यौ काय–ब्यूहु मनु काम ॥१६७॥

बाल, कहा लाली भई लोइन–कोंइनु माँह ।
लाल, तुम्हारे दृगनु की परी दृगनु मैं छाँह ॥१६८॥

तरुनकोकनद – बरनबर भए अरुन निसि जागि ।
बाही कैं अनुराग दृग रहे मनौ अनुरागि ॥१६९॥

तजतु अठान न, हठ पर्‌यौ सठमति, आठौ जाम ।
भयौ बामु वा बाम कौ रहै कामु बेकाम ॥१७०॥

आवत जात न जानियतु , तेजहिं तजि सियरानु ।
घरहैं जँवाई लौं घट्‌यौ खरौ पूस–दिन–मानु ॥१७१॥

चलत चलत लौं लै चलैं सब मुख संग लगाइ ।
ग्रीषम बासर सिसिर निसि प्यौ मो पास बसाइ ॥१७२॥

बेसरि – मोती– दुति – झलक परी ओठ पर आइ ।
चूनौ होइ न चतुर तिय, क्यों पट पोछ्यों जाइ ॥१७३॥

चितु बितु बचतु न, हरत हठि लालन दृग बरजोर ।
सावधान के बटपरा ए , जागत के चोर ॥१७४॥

बिकसित – नवमल्लो कुसुम निकसित परिमल पाइ ।
परसि पजारति बिरहि हिय बरसि रहे की बाइ ॥१७५॥

गोप अथाइनु तैं उठे, गोरज छाई गैल ।
चलि, बलि, अलि अभिसार की भली सँझौखैं सैल ॥१७६॥

पहुँचति डटि रन –सुभट लौं, रोकि सकैं सब नाँहि ।
लाखनु हूँ की भीर मैं आँखि उहीं चलि जाँहि ॥१७७॥

सरस सुमिल चित तुरँग की करि करि अमित उठान ।
गोइ निबाहैं जीतियै खेलि प्रेम – चौगान ॥१७८॥

हँसि हँसि हेरति नवल तिय मद उमदाति ।
बलकि बलकि बोलति बचन, ललकि ललकि लपटाति ॥१७९॥

मिलि चंदन बेंदी रही गौरैं मुँह, न लखाइ ।
ज्यौं ज्यौं मद – लाली चढ़ै, त्यौं त्यौं उघरति जाइ ॥१८०॥

(सोरठा)

मैं समुझ्यो निराधार , यह जग काचो काँच सौ ।
एकै रूपु अपार , प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ ॥१८१॥

जहाँ जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ स्यामु सुभग सिरमौरु ।
बिन हूँ उन छिनु गहि रहतु दृगनु अजौं वह ठौरु ॥१८२॥

रँगी सुरत रँग, पिय हियैं लगी जगी सब राति ।
पैंड़ पैंड़ पर ठठुकि कै , ऐंड़ भरी ऐंड़ाति ॥१८३॥

लालन लहि पाऐं दुरै चोरी सौंह करैं न ।
सीस चढ़े पनिहा प्रगट कहैं पुकारैं नैन ॥१८४॥

तुरत तुरत कैसैं दुरत, मुरन नैन जुरि नीठि ।
डौंड़ी दै गुन रावरे कहति कनौड़ी डीठि ॥१८५॥

मरकत – भाजन – सलिल गत इन्दुकला कैं बेख ।
झींन झगा मैं झलमलै स्यामगात नखरेख ॥१८६॥

बालमु बारैं सौति कैं सुनि परनारि बिहार ।
भो रसु अनरसु , रिस रली, रीझ खीझ इक बार ॥१८७॥

दुरत न कुच बिच कंचुकी चुपरी, सारी सेत ।
कवि–आँकनु के अरथ लौं प्रगटि दिखाई देत ॥१८८॥

भई जु छबि तन बसन मिलि, बरनि सकैं सु न बैन ।
आँग–ओप आँगी दुरी, आँगी आँग दुरै न ॥१८९॥

सोनजुही सी जगमगति, अँग अँग जोबनु–जोति ।
सुरँग कुसूँभी कंचुकी, दुरँग देह दुति होति ॥१९०॥

बड़े न दूजे गुननु बिनु बिरद–बड़ाई पाइ ।
कहत धतूरे सौं कनकु , गहनौ गढ्यौ न जाइ ॥१९१॥

कनकु कनक तैं सौगुनौ मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाऐं बौराइ इहिं पाऐं हीं बौराइ ॥१९२॥

डीठिबरत बाँधी अटनु , चढ़ि धावत न डारात ।
इतहिं उतहिं वित दुहुनु के नट लौं आवत जात ॥१९३॥

झटकि चढ़ति उतरति अटा , नैंक न थाकति देह ।
भई रहति नट कौ बटा अटकी नागर–नेह ॥१९४॥

लोभ–लगे हरि रूप के, करी साँटि जुरि, जाइ ।
हौं इन बेची बीच हीं, लोइन बड़ी बलाइ ॥१९५॥

चिलक, चिकनाई, चटक सौं लफति सटक लौं आइ ।
नारि सलोनी साँवरी नागिनी लौं डसि जाइ ॥१९६॥

तोरस–राँच्यौ आन–बस कहौ कुटिल–मति, कूर ।
जीभ निबौरी क्यौं लगै, बौरी चाखि अँगूर ॥१९७॥

जुरे दुहुनु के दृग झमकि, रुके न झीनैं चीर ।
हलुकी फौज हरौल ज्यौं परै गोल पर भीर ॥१९८॥

केसर केसरि–कुंसुम के रहे अंग लपटाइ ।
लगे जानि नख अनखुली कत बोलति अनखाइ ॥१९९॥

दृग मिहचत मृग–लोचनी भर्यौ, उलटि भुज, बाथ ।
जानि गई तिय नाथ के हाथ परस हीं हाथ ॥२००॥

तजि तीरथ, हरि–राधिका–तन–दुति करि अनुरागु ।
जिहिं ब्रज–केलि–निकुंज–मग पग पग होत प्रयागु ॥२०१॥

खिन खिन में खटकति सु हिय, खरी भीर मैं जात ।
कहि जु चली, अनहीं चितै, ओठनु हीं बिच बात ॥२०२॥

अजौं न आए सहज रँग बिरह–दूबरैं गात ।
अब हीं कहा चलाइयति, ललन चलन की बात ॥२०३॥

अपनैं कर गुहि, आपु हठि हिय पहिराई लाल ।
नौल सिरी औरै चढ़ी बौलसिरी की माल ॥२०४॥

नई लगनि, कुल की सकुच बिकल भई अकुलाइ ।
दुहूँ ओर ऐंची फिरत, फिरकी लौं दिनु जाइ ॥२०५॥

इत तैं उत, उत तैं इतै, छिनु न कहूँ ठहराति ।
जक न परति, चकरी भई, फिरि आवति फिरि जाति ॥२०६॥

निसि अँधियारी, नील पटु पहिरि, चली पिय–गेह ।
कहौ, दुराई क्यों दुरै दीप सिखा सी देह ॥२०७॥

रह्यौ ढीठु ढाढ़सु गहैं, ससहरि गयौ न सूरु ।
मुर्‌यौ न मन सुरवानु चभि, भौ चूरनु चपि चूरु ॥२०८॥

सोहत अँगुठा पाइ कै अनवटु जर्‌यौ जराइ ।
जीत्यौ तरिवन–दुति, सु ढरि पर्‌यौ तरनि मनु पाइ ॥२०९॥

जंघ जुगल लोइन निरे करे मनौ बिधि मैन ।
केलि–तरुनु दुखदैन ए , केलि–तरुन सुखदैन ॥२१०॥

रही पकरि पाटी सु रिस भरे भौंह, चितु, नैन ।
लखि सपनैं तियआन–रत, जगतहु लगत हियैंन ॥२११॥

किय हाइलु चित–चाइ लगि, बजि पाइल तुव पाइ ।
पुनि सुनि सुनि मुँह–मधुरधुनि क्यौं न लालु ललचाइ ॥२१२॥

लीनैं हूँ साइसु, कीनैं जतन हजारु ।
लोइन लोइन–सिंधु तन पैरि ना पावत पारु ॥२१३॥

पट की ढिग कत ढाँपियति, सोभित सुभग सुबेष ।
हद रदछद छबि देति यह सद रद छद की रेख ॥२१४॥

नाह गरज नाहर गरज, बोलु सुनायौ टेरि ।
फँसी फौज मैं बंदि–बिच, हँसी सबनु तनु हेरि ॥२१५॥

बाल–बेलि सूखी सुखद इहिं रूखीरुख–घाम ।
फेरि डहडही कीजयै सुरस सींचि, घनश्याम ॥२१६॥

औंधाई सीसी, सु लखि बिरह–बरनि बिललात ।
बिच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ छुई न गात ॥२१७॥

तजी संक, सकुचति न चित बोलत बाकु कुबाकु ।
दिनछिनदा छाकी रहति, छुटतु न छिनु छबि–छाकु ॥२१८॥

फिर फिरि बूझति, कहि कहा कह्यौ साँवरे गात ।
कहा करत देखे, कहाँ, अली, चली क्यौं बात ॥२१९॥

नव नागरितन–मुलुकु लहि जोबन–आमिर–जौर ।
घटि बढ़ि तैं बढ़ि घटि रकम करीं और की और ॥२२०॥

कीजै चित सोई, तरे जिहिं पतितनु के साथ ।
मेरे गुन–औगुन–गननु गनौ न, गोपीनाथ ॥२२१॥

मृगनैनी दृग की फरक, उर–उछाह, तन फूल ।
बिन हीं पिय–आगम उमगि पलटन लगी दुकूल ॥२२२॥

रहे बरोठे मैं मिलत पिउ प्राननु के ईसु ।
आवत की भई बिधि की घरी घरी सु ॥२२३॥

रबि बंदौ कर जोरि, ए सुनत स्याम के बैन ।
भए हँसौं हैं सबनु के अति अनखौहैं नैन ॥२२४॥

हौं हीं बौरी बिरह–बस, कै बौरौ सबु गाउँ ।
कहा जानि ए कहत हैं ससिहिं सीतकर–नाउँ ॥२२५॥

अनी बड़ी उमड़ी लखैं असिबाहक, भट भूप ।
मंगलु करि मान्यौ हियैं, भो मुँहु मंगलु रूप ॥२२६॥

सोवत, जागत, सुपन–बस, रस, रिस, चैन, कुचैन ।
सुरति स्यामघन की, सु रति बिसरैं हूँ बिसरै न ॥२२७॥

संगति सुमति न पावहीं परे कुमति कैं धंध ।
राखौ मेलि कपूर मैं, हींग न होइ सुगंध ॥२२८॥

बड़े कहावत आप सौं, गरुवे गोपीनाथ ।
तौ बदिहौं, जौ राखिहौ हाथनु लखि मनु हाथ ॥२२९॥

(सोरठा)

कौड़ा आँसू–बूँद कस साँकर बरुनी सजल ।
कीने बदन निमूँद , दृग–मालिंन डारे रहत ॥२३०॥

उयौ सरद–राका–ससी, करति क्यौं न चिंत चेतु ।
मनौ मदन छितिपाल कौ छाँहगीरु छबि देतु ॥२३१॥

ढरे ढार , तेहीं ढरत, दूजैं ढार ढरैं न ।
क्यौं हूँ आनन आन सौं नैना लागत नै न ॥२३२॥

सोवत लखि मन मानु धरि , ढिग सोयौ प्यौ आइ ।
रही, सुपन की मिलनि मिलि, तिय हिय सौं लपटाइ ॥२३३॥

जोन्ह नहीं यह, तमु पहै , किए जु जगत निकेतु ।
होत उदै ससि के भयौ मानहु ससहरि सेतु ॥२३४॥

जात जात बितु होतु है ज्यौं जिय मैं संतोषु ।
होत होत जौ होइ तौ होइ घरी मैं मोषु ॥२३५॥

तन भूषन, अंजन दृगनु , पगनु , महावर–रंग ।
नहिं सोभा कौं साजियतु कहिबैं हीं कौं अंग ॥२३६॥

पाइ तरुनिकुच–उच्चपदु चिरम ठग्यौ सबु गाउँ ।
छुटैं ठौरु रहिहै वहै, जु हो मालु , छबि, नाउँ ॥२३७॥

नितप्रति एकत हीं रहत, बैस–बरन–मन–एक ।
चहियत जुगलकिसोर लखि लोचन–जुगल अनेक ॥२३८॥

मन धरति मेरौ कह्यौ तूँ आपनैं सयान ।
अहे, परनि परि प्रेम की परहथ पारि न प्रान ॥२३९॥

नख–रेख सोहैं नई, अलसौं हैं सब गात ।
सौं हैं होत न नैन ए , तुम सौंहैं कत खात ॥२४०॥

हरि , कीजति बिनती यहै तुम सौं बार हजार ।
जिहिं तिहिं भाँति डर्‌यौ रह्यौ पर्‌यौ रहौं दरबार ॥२४१॥

भौंह उँचै, आँचरु उलटि, मौरि मोरि , मुहु मोरि ।
नीठि नीठि भीतर गई , दीठि दीठि सौं जोरि ॥२४२॥

रस की सीरुख, ससिमुशी, हँसि हँसि बोलत बैन ।
गूढ़ मानु मन क्यौं रहै, भए बूढ़–रँग नैन ॥२४३॥

जिहिं निदाघ–दुपहर रहै भई माघ की राति ।
तिहिं उसीर की रावटी खरी आवटी जाति ॥२४४॥

रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनिया बारि ।
फेरति करि उलटी रई नई बिलोवनहाारि ॥२४५॥

देबर – फूल – हने जु , सु उठ हरषि अँग फूलि ।
हँसी करति औषधि सखिनु देह – ददोरनु भूलि ॥२४६॥

फूले फदकत लै फरी पल, कटाक्ष – करवार ।
करत बचावत बिय–नयन–पाइक धाई हजार ॥२४७॥

पहुला – हारु हियैं लसै, सन की बेंदी भाल ।
राखति खेत खरे खरे खरे – उरोजनु बाल ॥२४८॥

लई सौंह सी सुनन की तजि मुरली, धुनि आन ।
किए रहति नित रातिदिनु कानन – लागे कान ॥२४९॥

तूँ मति मानै मुकतई कियैं कपट चित कोटि ।
जौ गुनही, तौ राखियै आँखिनु माँझ अगोटि ॥२५०॥

गिरि तें ऊँचे रसिक – मन बुढ़े जहाँ हजारु ।
वहै सदा पसु – नरनु कौ प्रेम – पयोधि पगारु ॥२५१॥

भावकु उभरौंहौं भयौ, कछुकु पर्‌यौ भरुआई ।
सीप – हरा कैं मिसि हियौ निसि दिन हेरत जाई ॥२५२॥

गली अँधेरी, साँकरी भौ भटभेरा आनि ।
पर पिछाने परसपर दोऊ परस – पिछानि ॥२५३॥

कहि , पठई जिय – भावति पिय आवन की बात ।
फूली आँगन मैं फिरै, आँग न आँग समात ॥२५४॥

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार ।
अब, अलि, रही गुलाब मैं अपत, कँटीली डार ॥२५५॥

मैं बरजी कै बार कै बार तूँ , इत कित लेति करौट ।
पँखुरी लगैं गुलाब की परिहै गात खरौट ॥२५६॥

नीचयै नीची निपट दीठि कुही लौं दौरि ।
उठि ऊँचैं, नीचौं दयौ मनु कुलिंगु झपि, झौरि ॥२५७॥

सूर उदित हूँ मुदित–मन, मुखु सुखमा की ओर ।
चितै रहत चहुँ ओर तैं, निहचल चखनु , चकोर ॥२५८॥

स्वेद – सलिलु , सोमांस – कुसु गहि दुलही अरु नाथ ।
दियौ हियौ सँग हाथ कैं हथलेय हीं हाथ ॥२५९॥

दच्छिन पिय , ह्वै बाम–बस, बिसराँई तिय आन ।
एकै बापरि कैं बिरह लागी बरष बिहान ॥२६०॥

(सोरठा)

मोहूँ दीजै मोषु , ज्यौं अनेक अधमनु दियौ ।
जौ बाँधैं ही तोषु , तौ बाँधौ अपनैं गुननु ॥२६१॥

चितु तरसतु , मिलत न बनतु बसि परोस कैं बास ।
छाती फाटी जाजि सुनि टाटी – ओट उसास ॥२६२॥

जालरंध्र – मग अँगनु कौ कछु उजास सौ पाइ ।
पीठि दिये जगत्यौ रह्यौ, डीठि झँरोखैं लाइ ॥२६३॥

परतिय – दोषु पुरान सुनि लखि मुलकी सुखदानि ।
कसु करि राखी मिश्र हूँ मुँह–आई मुसकानि ॥२६४॥

सहित सनेह, सकोच सुख, स्वेद, कंप, मुसकानि ।
प्रान पानि करि आपनैं, पान धरे मो पानि ॥२६५॥

सीरैं जतननु सिसिर – रितु सहि बिरहिन–तन तापु ।
बसिबे कौं ग्रीषम–दिननु पर्‌यौ परोसिनि पापु ॥२६६॥

सोहतु संगु समान सौं, यहै कहै सबु लोगु ।
पान – पीक ओठनु बनै, काजर नैननु जोगु ॥२६७॥

तूँ रहि, हौं हीं, सखि, लखौ; चढ़ि न अटा, बलि, बाल ।
सबहिनु बिनु हीं ससि–उदै दीजतु अरघु अकाल ॥२६८॥

दियौ अरघु , नीचैं चलौ, संकटु भानैं जाइ ।
सुचिति ह्वै औरौ सबै ससिहिं बिलोकैं आइ ॥२६९॥

ललित स्याम लीला, ललन, बढ़ी चिबुक छबि दून ।
मधु – छाक्यौ मधुकरु पर्‌यौ मनौ गुलाब – प्रसून ॥२७०॥

सबै सुहाएई लगैं बसैं सुहाऐं ठाम ।
गौरैं मुँह बेंदी लसैं अरुन, पीत, सित, स्याम ॥२७१॥

भए बटाऊ नेहु तजि, बादि बकति बेकाज ।
अब, अलि, देत उराहनौ अति उपजति उर लाज ॥२७२॥

मानु कत बरजति न हौं, उलटि दिवावति सौंह ।
करी रिसौंहीं जाहिंगी सहज हँसौंहीं भौंह ॥२७३॥

तिय – तिथि तरुन – किसोर – बय पुन्यकाल–सम दोनु ।
काहूँ पुन्यनु पाइयतु बैस – संधि – संक्रोनु ॥२७४॥

गनती गनिबे तैं रहे, छत हूँ अछत समान ।
अलि, अब ए तिथि औम लौं परे रहौ तन प्रान ॥२७५॥

सबै हँसत करतार दै नागरता कैं नाँव ।
गयौ गरबु गुन कौ सरबु गऐं गँवारैं गाँव ॥२७६॥

जाति मरी बिछुरी घरी जल – सफरी की रीति ।
खिन खिन होति खरी खरी, अरी, जरी यह प्रीति ॥२७७॥

पिय – प्राननु की पाहरू, करति जतन अति आपु ।
जाकी दुसह दसा पर्‌यौ सौतिनिहूँ संतापु ॥२७८॥

अहे, कहै न कहा कह्यो तोसौं नंदकिसोर ।
बड़बोली, बलि, होति कत बड़े दृगनु कैं जोर ॥२७९॥

दियौ जु पिय लखि चखनु मैं खेलत फाग–खियालु ।
बाढ़त हूँ अति पीर सु न काढ़त बनतु गुलालु ॥२८०॥

मैं तापइ त्रयताप सौं राख्यौ हियौ हमामु ।
मति कबहुँक आऐं यहाँ पुलकि पसीजै स्यामु ॥२८१॥

बहकि बड़ाई आपनी कत राँचत मति–भूल ।
बिनु मधु मधुकर कैं हियैं गड़ै न, गुड़हर , फूल ॥२८२॥

आड़े दै आले बसन जाड़े हूँ की राति ।
साहसु ककै सनेह – बस सखी सबै ढिग जाति ॥२८३॥

सब अँग करि राखी सुघर नाइक नेह–सिखाइ ।
रसजुत लेति अनंत गति पुतरी पातुर – राइ ॥२८४॥

सुनत पथिक – मुँह, माह–निसि लुवैं चलैं उहिं गाम ।
बिनु बूझैं, बिनु हीं कहैं, जियति बिचारी बाम ॥२८५॥

अनत बसे निसि की रिसनु उर बरि रही बिसेषि ।
तऊ लाज आई झुकत खरे लजीहैं देखि ॥२८६॥

सुरँगु महावरु सौति – पग निरखि रही अनखाइ ।
पिय–अँगुरिनु लाली लखैं खरी उठी लगि लाइ ॥२८७॥

मानहु मुँह ट्ट दिखरावनी दुलहिहिं करि अनुरागु ।
सासु सदनु , मनु ललन हूँ , सौतिनु दियौ सुहागु ॥२८८॥

कत सकुचत, निधरक फिरौ, रतियौ खोरि तुम्हैं न ।
कहा करौ, जौ जाइ ए लगैं लगौहैं नैन ॥२८९॥

आपु दियौ मनु फेरि लै, पलटैं दीनी पीठी ।
कौन चाल यह रावरी, लाला, लुकावत डीठी ॥२९०॥

गोपिनु सँग निसि सरद की रमत रसिक रस–रास ।
लहाछेह अति गतिनु की सबनु लखे सब–पास ॥२९१॥

स्याम–सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा–तीरु ।
अँसुवनु करति तरौंस कौ खिनकु खरौंहों नीरु ॥२९२॥

गोपिनु कैं अँसुवनु भरी सदा असोस, अपार ।
डगर डगर नै ह्वै रही, बगर बगर कैं बार ॥२९३॥

दुचितैं चित हलति न चलति, हँसति न झुकति, बिचारि ।
लखत चित्र पिउ लखि, चितै रही चित्र लौं नारि ॥२९४॥

कन दैबौ सौंप्यौ ससुर , बहू थुरहथी जानि ।
रूप–रहचटैं लगि लग्यौ माँगन सबु जगु आनि ॥२९५॥

निरखि नवोढ़ा नारि–तन छुटत लरिकई–लेस ।
भौ प्यारौ प्रीतमु नियनु , मनहु चलत परदेस ॥२९६॥

प्रानप्रिया हिय मैं बसै, नखरेखा–ससि भाल ।
भलौ दिखायौ आइ यह हरि–हर–रूप, रसाल ॥२९७॥

तिय निय हिय जु लगी चलत पिय–नख–रेख–खरौंट ।
सूखन देति न सरसई खोंटि खोंटि खत–खौंट ॥२९८॥

सघन कुंज, घन घन–तिमिरु, अधिक अँधेरी राति ।
तऊ न दुरिहै, स्याम, वह दीपसिखा सी जाति ॥२९९॥

स्वारथु, सुकृतु न, श्रमु बृथा; देखि, बिहंग, बिचारि ।
बाक , पराऐं पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि ॥३००॥

सीस–मुकुट , कटि–काछनी, कर–मुरली, उर–माल ।
इहिं बानक मो मन सदा बसौ, बिहारी लाल ॥३०१॥

भृकुटी–मटकनि, पीतपट–चटक , लटकती चाल ।
चलचख–चितवनि चोरि चितु लियौ बिहारी लाल ॥३०२॥

संगति–दोषु लगै सबनु, कहे ति साँचे बैन ।
कुटिल–बंक–भ्रुव–सँग भए कुटिल, बंक–गति नैन ॥३०३॥

जरी–कोर गोरैं बदन बढ़ी खरी छबि, देखु ।
लसित मनौ बिजुरी किए सारद–ससि–परिबेषु ॥३०४॥

चितवनि भोरे भाइ की, गोरैं मुँह मुसकानि ।
लागति लटकि अली–गरैं, चित खटकति नित आनि ॥३०५॥

इहिं द्वैहीं मौती सुगथ तूँ, नथ गरिब निसाँक।
जिहिं पहिरैं जग–दृग ग्रसति लसति हँसति सी नाँक ॥३०६॥

हरि–छबि–जल जब तैं परे, तब तैं छिनु बिछुरैं न ।
भरत ढरत, बूड़त तरत रहत घरी लौं नैन ॥३०७॥

मार–सुमार–करी डरी मरी, मरीहिं न मारि ।
सींचि गुलाब घरी घरी, अरी, बरीहिं न बारि ॥३०८॥

क्यौं हूँ सहबात न लगै, थाके भेद–उपाइ ।
हठ–दृढ़गढ़–गढ़वै सु चलि लीजै सुरँग लगाइ ॥३०९॥

तो ही का छुटि मानु गौ देखत हीं ब्रजराज ।
रही घरिक लौं मान सी मान करे की लाज ॥३१०॥

न ए बिससियहि लखि नए दुरजन दुसह–सुभाइ ।
आँटैं परि प्राननु हरत काँटैं लौं लगि पाइ ॥३११॥

सखि, सोहति गोपाल कैं उर गुंजनु की माल ।
बाहिर लसति मनौ पिए दावानल की ज्वाल ॥३१२॥

गहिली, गरबु न कीजियै समै–सुहागहिं पाइ ।
जिय की जीवनि जेठ, सो माह न छाँह सुहाइ ॥३१३॥

हँसि, हँसाइ, उर लाइ उठि, कहि न रुखौं हैं बैन ।
जकित थकित ह्वै तकि रहे तकत तिलौंछै नैन ॥३१४॥

तीज–परब सौतिनु सजे भूषन बसन सरीर ।
सबै मरगजे–मुँह करीं इहीं मरगजैं चीर ॥३१५॥

गढ़–रचना, बरुनी, अलक, चितवनि, भौंह, कमान ।
आघु बँकाईहीं चढ़ै, तरुनि, तुरंगम, तान ॥३१६॥

इत आवति चलि, जाति उत चली, छसातक हाथ ।
चढ़ी हिंडोरैं सैं रहै लगी उसासनु साथ ॥३१७॥

डर न टरै, नींद न परै, हरै न काल–बिपाकु ।
छिनकु छाकि उछकै न फिरि, खरौ विषमु छबि–छाकु ॥३१८॥

रमन कह्यौ हठि रमन कौं रतिबिपरीत–बिलास ।
चितई करि लोचन सतर, सलज, सरोस, सहास ॥३१९॥

ऐंचति सी चितवनि चितै भई ओठ अलसाइ ।
फिरि उझकनि कौं मृगनयनि दृगनि लगनिया लाइ ॥३२०॥

नर की अरु नल–नीर की गति एकै करि जोइ ।
जेतौ नीची ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ ॥३२१॥

भूषन–भारु सँभारिहै क्यौं इहिं तन सुकुमार ।
सूधे पाइ न धर परैं सोभा हीं कैं भार ॥३२२॥

मुँह मिठासु, दृग चीकने, भौंहैं सरल सुभाइ ।
तऊ खरैं आदर खरौ खिन खिन हियौ सकाइ ॥३२३॥

जदपि नाहिं नाहीं नहीं बदन लगी जकजाति ।
तदपि भौंह–हाँसी भरिनु हाँसीयै ठहराति ॥३२४॥

छुटन न पैयतु छिनकु बसि, नेह–नगर यह चाल ।
मार्‌यौ फिरि फिरि मारियै, खूनी फिरै खुस्याल ॥३२५॥

चुनरी स्याम सतार नभ, मुँह ससि की उनहारि ।
नेहु दबावतु नींद लौं निरखि निसा सी नारि ॥३२६॥

कहत सबै, बेंदी दियैं आँकु हसगुनो होतु ।
तिय–लिलार बेंदी दियैं अगिनितु बढ़तु उदोतु ॥३२७॥

तर झरसी, ऊपर गरी, कज्जल–जल छिरकाइ ।
पिय पाती बिन हीं लिखी, बाँची बिरह–बलाइ ॥३२८॥

(सोरठा)

बिरह सुकाई देह, नेहु कियौ अति डहडहौ ।
जैसें बरसैं मेह, जरै जवासौ, जौ जमै ॥३२९॥

(दोहा)

देखी सो न, जु ही फिरति सोनजुही सैं अंग ।
दुति–लपटनु पट सेत हूँ करति बनौटी रंग ॥३३०॥

बढ़त बढ़त संपति–सलिलु मन–सरोज बढ़ि जाइ ।
घटत घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ॥३३१॥

ह्याँ न चलै, बलि, रावरी चतुराई की चाल ।
सनख हियैं खिन–खिन नटत अनख बढ़ावत, लाल ॥३३२॥

डीठि न परतु समान–दुति कनकु कनक सैं गात ।
भूषन कर करकस लगत परसि पिछाने जात ॥३३३॥

करतु मलिन आछी छबिहिं, हरतु जु सहजु बिकासु ।
अंगरागु अंगनु लगै, ज्यौं आरसी उसासु ॥३३४॥

पहिरि न भूषन कनक के, कहि आवत इहिं हेत ।
दरपन के से मोरचे, देह दिखाई देत ॥३३५॥

जदपि चावाइनु चीकनी चलति चहूँ दिसि सैन ।
तऊ न छाड़त दुहुनु के हँसी रसीले नैन ॥३३६॥

अनरस हूँ रसू पाइयतु , रसिक रसीली–पास ।
जैसैं साँठे की कठिन गाँठ्यौ भरी मिठास ॥३३७॥

गोरी छिगुनी, नखु अरुनु, छला स्यामु छबि देइ ।
लहत मुकुति रति पलकु यह नैन त्रिबेनी सेइ ॥३३८॥

उर मानिक की उरबसी डटल घटतु दृग–दागु ।
छलकतु बाहिर भरि मनौ तिय–हियकौ–अनुरागु ॥३३९॥

सहज सेत पँचतोरिया पहिरत अति छबि होति ।
जलचादर के दीप लौं जगमगाति तन–जोति ॥३४०॥

कोरि जतन कोऊ करौ, परै प्रकृतिहिं बीचु ।
नल–बल जलु ऊँचैं चढ़ै, अंत नीच कौ नीचु ॥३४१॥

लगत सुभग सीतल किरन, निसि–सुख दिन अवगाहि ।
माह ससी–भ्रम सूर–त्यौं रहति चकोरी चाहि ॥३४२॥

तपन–तेज तपु–ताप तपि, अतुल तुलाई माँह ।
सिसिर–सीतु क्यौं हुँ न कटै बिनु लपटैं तिय नाँह ॥३४३॥

रह न सकी सब जगत में सिसिर–सीत कैं त्रास ।
गरम भाजि गढ़वै भई तिय–कुच अचल मवास ॥३४४॥

झूठे जानि न संग्रहे मन मुँह–निकसे बैन ।
याही तैं मानहु किये बातनु कौं बिधि नैन ॥३४५॥

सुघर–सौति–बस पिउ सुनत दुलहिनि दुगुन हुलास ।
लखी सखी तन दीठि करि सगरब, सलज, सहास ॥३४६॥

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर ।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ॥३४७॥

टुनहाई सब टोल मैं रही जु सौति कहाइ ।
सुतैं ऐं चि प्यौं आपु–त्यौं करी अदोखिल आइ ॥३४८॥

दृगनु लगत, बेधत हियहिं, बिकल करत अँग आन ।
ए तेरे सब तैं विषम ईछन–तीछन बान ॥३४९॥

पीठि दिये हीं, नैंक मुरि, कर घूँघट–पटु टारि ।
भरि, गुलाब की मूठि सौं, गई मूठि सी मारि ॥३५०॥

गुनी गुनी सबकैं कहैं निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौ कहूँ तरु अरक तैं अरक समानु उदोतु ॥३५१॥

छुटत मुठिनु सँग हीं छुटी लोक–लाज, कुल–चाल ।
लगे दुहुनु इक बेर ही चल चित, नैन गुलाल ॥३५२॥

ज्यौं ज्यौं पटु झटकति, हठति, हँसति, नचावति नैन ।
त्यौं त्यौं निपट उदारहूँ फगुवा देत बनै न ॥३५३॥

ज्यौं ज्यौं पावक–लपट सी तिय हिय सौं लपटाति ।
त्यौं त्यौं छुही गुलाब सैं छतिया अति सियराति ॥३५४॥

भाल–लालबेंदी–छए छुटे बार छबि देत ।
गह्यौ राहु, अति आहु करि, मनु ससि सूर–समेत ॥३५५॥

तिय, कित कमनैती पढ़ी, बिनु जिहि भौंह–कमान ।
चलचित–बेझैं चुकति नहिं बंकबिलोकनि–बान ॥३५६॥

दसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख–दंदु ।
अधिक अँधरौ जग करत मिलि मावस रबि–चंदु ॥३५७॥

ललन–चलनु सुनि पलनु मैं अँसुआ झलके आइ ।
भई लखाइ न सखिनु हूँ झूठैं हीं जमुहाइ ॥३५८॥

कंचनतन–धन–बरन बर रह्यौ रंगु मिलि रंग ।
जानी जाति सुबास हीं केसरि लाई अंग ॥३५९॥

खरैं अदब, इठलाहटी, उर उपजावति त्रासु ।
दुसह संक बिस कौ करै जैसैं सोंठि–मिठासु ॥३६०॥

तौ लगु या मन–मदन मैं हरि आवैं किहिं बाट ।
बिकट जटे जौ लगु निपट खुटैं न कपट–कपाट ॥३६१॥

ह्वै कपूरमनिमय रही मिलि तन–दुति मुकतालि ।
छिन छिन खरी विचच्छिनौ लखति छ्वाइ तिनु आलि ॥३६२॥

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर–चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन–हियैं, दई, नई यह रीति ॥३६३॥

नहिं नचाइ चितवति दृगनु, नहिं बोलति मुसकाइ ।
ज्यौं ज्यौं रूखी रूख करति, त्यौं त्यौं चितु चिकनाइ ॥३६४॥

वैसीयै जानी परति झगा ऊजरे माँह ।
मृगनैनी लपटत जु यह बेनी उपटी बाँह ॥३६५॥

प्यासे दुपहर जेठ के फिरे सबै जलु सोधि ।
मरुधर पाइ मतीरु हीं मारू कहत पयोधि ॥३६६॥

विषम वृषादित की तृषा जिये मतीरनु सोधि ।
अमित, अपार, अगाध–जलु मारौ मूढ़ पयोधि ॥३६७॥

निपट लजीली नवल तिय बहकि बारुनी सेइ ।
त्यौं त्यौं अति मीठी गगति, ज्यौं ज्यौं ढौथौ देइ ॥३६८॥

सरस कुसुम मँडरातु अलि, न झुकि झपटि लपटातु ।
दरसत अति सुकुमारु तनु, परसत मन न पत्यातु ॥३६९॥

निरदय, नेह नयौ निरखि भयौ जगतु भयभीतु ।
यह न कहूँ अब लौं सुनी, मरि मारिये जु मीतु ॥३७०॥

भजन कह्यौ, तातैं भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार ।
दूरि भजन जातैं कह्यौ, सो तैं भज्यौ, गँवार ॥३७१॥

नैन लगे तिहिं लगनि जु, न छुटैं छुटैं हूँ प्रान ।
काम न आवत एक हूँ तेरे सैक सयान ॥३७२॥

उड़ति गुड़ी लखि ललन की अँगना अँगना माँह ।
बौरी लौं दौरी फिरति छुबति छबीली छाँह ॥३७३॥

ऊँचैं चितै सराहियतु गिरह कबूतरु लेतु ।
झलकति दृग मुलकित बदनु, तनु पुलकित किहिं हेतु ॥३७४॥

लागत कुटिल कटाच्छ–सर क्यौं न होहिं बेहाल ।
कढ़त जि हियहिं दुसाल करि, तऊ रहत नटसाल ॥३७५॥

जनमु जलधि, पानिपु बिमलु, भौ जग आघु अपारु ।
रहै गुनी ह्वै गर–पर्‌यौ, भलैं न मुकता–हारु ॥३७६॥

गहै न नेकौ गुन–गरबु, हँसौ सबै संसारु ।
कुच–उचपद–लालच रहै गरैं परैं हूँ हारु ॥३७७॥

तच्यौ आँच अब बिरह की, रह्यौ प्रेम–रस भीजि ।
नैननु कैं मग जलु बहै हियौ पसीजि ॥३७८॥

छला परोसिनि हाथ तैं, छलु करि, लियौ, पिछानि ।
पियहिं दिखायौ लखि बिलखि, रिस–सूचक मुसकानि ॥३७९॥

हठि, हितु करि प्रीतम–लीयौ, कियौ तु सौति सिंगारु ।
अपनैं कर मोतिनु गुह्यौ, भयौ हरा हर–हारु ॥३८०॥

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु ।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु ॥३८१॥

वै ठाढ़े, उमदाहु उत, जल न बूझै बड़वागि ।
जाही सौं लाग्यौ हियौ, ताही कैं हिय लागि ॥३८२॥

ढीठि परोसिनि ईठि ह्वै कहै जु गहे सयानु ।
सबै सँदेसे कहि कह्यौ मुसकाहट मैं मानु ॥३८३॥

छिनकु चलति, ठठुकति छिनकु, भुज प्रीतम–गल डारि ।
चढ़ी अटा देखति घटा बिज्जु–छटा सी नारि ॥३८४॥

धनि यह द्वैज, जहाँ लख्यौ, तज्यौ दृगनु दुख–दंदु ।
तुम भागनु पूरब उयौ अहो ! अपूरबु चंदु ॥३८५॥

लरिका लैबे कैं मिसनु लंगरु मो ढिग आइ ।
गयौ अचानक आँगुरी छाती छैल छुवाइ ॥३८६॥

ढीयौ दै बोलति, हँसति पोढ़–बिलास अपोढ़ ।
त्यौं त्यौं चलत न पिय–नयन छकए छकी नबोढ़ ॥३८७॥

रनित भृंग–घंटावली, झरति दान मधु–नीरु ।
मंद मंद आवतु चल्यौ कुंजरु कुंज समीरु ॥३८८॥

रही रुकी क्यों हूँ चलि, आधिक राति पधारि ।
हरति तापु सब द्यौस कौ उर लगि यारि बयारि ॥३८९॥

चुवतु स्वेद मकरंद–कन, तरु–तरु–तर बिरमाइ ।
आवतु दच्छिन देस तैं थक्यौ बहोटी बाइ ॥३९०॥

पतवारी माला पकरि, और न कछू उपाउ ।
तरि संसार–पयोधि कौं, हरि–नावैं करि नाउ ॥३९१॥

लपटी पुहुप–पराग–पट, सनी स्वेद मकरन्द ।
आवति, नारि नबोढ़ लौं, सुखद बायु गति मन्द ॥३९२॥

ललन, सलोने अरु रहे अति सनेह सौं पागि ।
तनक कचाई देत दुख सूरन लौं मुँह लागि ॥३९३॥

न करु, न डरु, सबु जगु कहतु, कत बिनु काज लजात ।
सौहैं कीजै नैन, जौ साँची सौहैं खात ॥३९४॥

रहिहैं चंचल प्रान ए , कहि, कौन की आगोट ।
ललन चलन की चित धरी, कल न पलनु की ओट ॥३९५॥

जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होइ न, मित्त ।
रज राजसु न छुवाइ तौ नेह–चीकनौं चित्त ॥३९६॥

कोरि जतन कीजै, तऊ नागर–नेहु दुरै न ।
कहै देत चितु चीकनी नई रुखाई नैन ॥३९७॥

लाल, तुम्हारे रूप की, कहौ, रीति यह कौन ।
जासौं लागत पलकु दृग लागत पलक पलौ न ॥३९८॥

कालबूत दूती बिना जुरै न और उपाइ ।
फिर ताकैं टारैं बनै पाकैं प्रेम–लदाइ ॥३९९॥

रह्यौ ऐंचि, अंतु न लहै अवधि–दुसासनु बीरु ।
आली, बाढ़तु बिरहु ज्यौं पंचाली कौ चीरु ॥४००॥

यह बरिया नहिं और की, तूँ करिया बह सोधि ।
पाहन–नाव चढ़ाइ जिहिं कीने पार पयोधि ॥४०१॥

पावक–झर तैं मेह–झर दाहक दुसह बिसेखि ।
दहै देह वाकै परस याहि दृगनु हीं देखि ॥४०२॥

चलित ललित, श्रम–स्वेदकन–कलित, अरुन मुख तैंन ।
बन–बिहार थाकीतरुनि–खरे थकाए नैन ॥४०३॥

कुढँगु कोप तजि रँग–रली करतिं जुवति जग, जोइ ।
पावस, गूढ़ न बात यह, बूढ़नु हूँ रँगु होइ ॥४०४॥

न जक धरत हरि हिय धरैं , नाजुक कमला बाल ।
भजत, भार–भय–भीत ह्वै , घनु, चन्दुन, बनमाल ॥४०५॥

नासा मोरि, नचाइ जे करी कका की सौंह ।
काँटे सी कसकैं ति हिय गड़ी कँटीली भौंह ॥४०६॥

क्यौं बसियै, क्यौं निबहियै, नीति नेह–पुर नाँहि ।
लगालगी लोइन करैं, नाहक मन बँधि जाँहि ॥४०७॥

ललन–चलनु सुनि चुपु रही, बोली आपु न ईठि ।
राख्यौ गहि गाढ़ैं गरैं मनौ गलगली डीठि ॥४०८॥

अपनी गरजनु बोलियत, कहा निहोरौ तोहिं ।
तू प्यारौ मो जीय कौं, मो ज्यौ प्यारौ मोहिं ॥४०९॥

रह्यौ चकतु चहुँघा चितै चितु मेरौ मति भूलि ।
सूर उयैं आए , रही दृगनु साँझ सी फूलि ॥४१०॥

अति अगाधु, अति औथरौ नदी, कूपु, सरु, बाइ ।
सो ताकौ सागरु, जहाँ जाकी प्यास बुझाइ ॥४११॥

कपट सतर भौंहें करीं, मुख अनखौंहैं बैन ।
सहज हसौं हैं जानि कै सौहैं करति न नैन ॥४१२॥

मानहु बिधि तन–अच्छछबि स्वच्छ राखिबैं काज ।
दृग–पग–पोछन कौं करे भूषन पायंदाज ॥४१३॥

बिरह–बिथा–जल–परस–बिन बसियतु मो–मन–ताल ।
कछु जानत जल–थंभ–बिधि दुर्जोधन लौं, लाल ॥४१४॥

रुख रूखी मिस–रोष, मुख कहति रुखौं हैं बैन ।
रूखे कैसैं होत ए नेह चीकने नैन ॥४१५॥

पति–रितु–औगुन–गुन बढ़तु मागु, माह कौ सीतु ।
जातु कठिन ह्वै अति मृदौ रवनी–मनु, नवनीतु ॥४१६॥

त्यौं त्यौं प्यासेई रहत ज्यौं ज्यौं पियत अघाइ ।
सगुन सलोने रूप की जु न चख–तृषा बुझाइ ॥४१७॥

अरुन–बरन तरुनी–चरन अँगुरी अति सुकुमार ।
चुवत सुरँग रँगु सी मनौ चपि बिछियनु कैं भार ॥४१८॥

मोर–मुकट की चंद्रिकनु यौं राजत नँदनंद ।
मनु ससिसेखर की अकस किय सेखर सत चंद ॥४१९॥

अधर धरत हरि कैं, परत ओंठ–दीठि–पट जोति ।
हरित बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष–रंग होति ॥४२०॥

तौ अनेक औगुन–भरिहिं चाहै याहि बलाइ ।
जौ पति संपति हूँ बिना जदुपति राखे जाइ ॥४२१॥

प्रीतम–दृग–मिहचत प्रिया पानि–परस–सुखु पाइ ।
जानि पिछानि अजान लौं नैंकु न होति जनाइ ॥४२२॥

देखौं जागत वैसियै साँकर लगी कपाट ।
कित ह्वै आवतु, जातु भजि, को जानै, किहिं बाट ॥४२३॥

करु उठाइ घूँघटु करत उझरत पट–गुझरौट ।
सुख–मोटैं लूटीं ललन लखि ललना की लौट ॥४२४॥

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल ।
दुखी होहुगे सरल हिय बसत, त्रिभंगी लाल ॥४२५॥

निज करनी सकुचेहिं कत सकुचावत इहिं चाल ।
मोहूँ से नित–बिमुख–त्यौं सनमुख रहि, गोपाल ॥४२६॥

मोहिं तुम्हैं बाढ़ी बहस, को जीतै, जदुराज ।
अपनैं बिरद की दुहूँ निबाहन लाज ॥४२७॥

दूरि भजत प्रभु पीठि दै गुन–बिस्तारन काल ।
प्रगटत निर्गुन निकट रहि चंग–रंग भूपाल ॥४२८॥

कहै यहै श्रुति सुम्रत्यौ, यहै सयाने लोग ।
तीन दबावत निसकहीं पातक, राजा, रोग ॥४२९॥

सो सिर धरि महिमा मही लहियति राजा राइ ।
प्रगटत जड़ता अपनियै सु मुकटु पहिरत पाइ ॥४३०॥

को कहि सकै बड़ेनु सौं लखैंबड़ीयौ भूल ।
दीने दई गुलाब की इन डारनु वे फूल ॥४३१॥

समै समै सुन्दर सबै, रूपु कुरूपु न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ॥४३२॥

या भव–पारावार कौं उलँघि पार को जाइ ।
तिय–छबि छायाग्राहिनी ग्रहै बीचहीं आइ ॥४३३॥

दिन दस आदरु पाइ कै करि लै आपु बखानु ।
जौ लगि काग ! सराधपखु , तौ लगि तौ सनमानु ॥४३४॥

मरतु प्यास पिंजरा–पर्‌यौ सुआ समै कैं फेर ।
आदरु दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर ॥४३५॥

वेई कर, ब्यौरिन वहै, ब्यौरौ कौन विचार ।
जिनहीं उरझ्‌यौ मो हियौ, तिनहीं सुरझे बार ॥४३६॥

इहीं आस अटक्यौ रहतु अलि गुलाब कैं मूल ।
ह्वैहैं फेरि बसंत ऋतु इन डारनु वे फूल ॥४३७॥

वे न इहाँ नागर, बढ़ी जिन आदर तो आब ।
फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ गवँई–गाँव, गुलाब ॥४३८॥

चल्यौ जाइ, ह्याँ कौ करै हाथिनु के व्यापार ।
नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार ॥४३९॥

खरी लसति गोरैं धँसति पान की पीक।
मनौ गुलीबँद–लाल की, लाल, लाल दुति–लीक॥४४०॥

पाइल पाइ लगी रहै, लगौ अमोलिक लाल ।
भोडर हूँ की भासिहै बेंदी भामिनी–भाल ॥४४१॥

कुटिल अलक छुटि परत मुख बढ़िगौ इतौ उदोतु ।
बंक बकारी देत ज्यौं दामु रुपैया होतु ॥४४२॥

रहि न सक्यौ, कसु करि रह्यौ, बस करि लीनौ मार ।
भेदि दुसार कियौ तन–दुति, भेदै सार ॥४४३॥

खल–बढ़ई बलु करि धके, कटै न कुबत–कुठार ।
आलबाल उर झालरी खरी प्रेम–तरु–डार ॥४४४॥

स्यौं बिजुरी मनु मेह आनि इहाँ बिरहा धरे ।
आठौ जाम, अछेह, दृग जु बरत बरसत रहत ॥४४५॥

कत बेकाज चालाइयति चतुराई की चाल ।
कहे देति यह रावरे सब गुन निरगुन माल ॥४४६॥

उनकौ हितु उनहीं बनै, कोऊ करौ अनेकु।
फिरतु काकगोलकु भयौ दुहूँ देह ज्यौ एकु ॥४४७॥

गड़े, बड़े छबि–छाक, छिगुनी–छोर छुटैंन ।
रहे सुरँग रँग रँगि उहीं नह–दी महदी नैन ॥४४८॥

बाढ़तु तो उर उरज–भरु भरि तरुनई–बिकास ।
बोझनु सौतिनु कैं हियैं आवति रूँधि उसास ॥४४९॥

अलि, इन लोइन–सरनु कौ खरौ विषम संचारु ।
लगैं लगाऐं एक से दुहूँनु करत सुमारु ॥४५०॥

मूड़ चढ़ाऐंऊ रहै पर्‌यौ पीठि कच–भारु ।
रहै गरैं परि, राखिबौ तऊ हियैं पर हारु ॥४५१॥

करतु जातु जेती कटनि बढ़ि रस–सरिता–सोतु ।
आलबाल उर प्रेम–तरु तितौ तितौ दृढ़ होतु ॥४५२॥

राति द्यौस हौंसे रहै, मानु न ठिकु ठहराइ ।
जेतौ औगुनु ढूाढियै, गुनै हाथ परि जाइ ॥४५३॥

मनु न मनावन कौं करैं, देतु रुठाइ रुठाइ ।
कौतुक–लाग्यौ प्यौ प्रिया–खिझहूँ रिझवति जाइ ॥४५४॥

बिरह–बिपति–दिनु परत हीं तजे सुखनु सब अंग ।
रहि अब लौं ऽब दुखौ भए चलाचलै जिय–संग ॥४५५॥

नयैं बिरह बढ़ती बिथा खरी बिकल जिय बाल ।
बिलखी देखि परोसिन्यौ हरखि हँसी तिहिं काल ॥४५६॥

छतौ नेहु कागर हियैं, भई लखाइ न टाँकु।
बिरह–तचैं उधर्‌यौ सु अब सेंहुड़ कैसो आँकु ॥४५७॥

फूलीफाली फूल सी फिरति जु बिमल–बिकास ।
भोरतरैयाँ होहु ते चलत तोहिं पिय–पास ॥४५८॥

अरी, खरी सटपट परी बिधु आधैं मग हेरि ।
संग–लगैं मधुपनु लई भागनु गली अँधेरि ॥४५९॥

चलतु धेरु घर घर , तऊ घरी न घर ठहराइ ।
समुझि उहीं घर कौं चलै, भूलि उहीं घर जाइ ॥४६०॥

इक भीजैं, चहलैं परैं, बूड़ैं, बहैं हजार ।
किते न औगुन जग करैं बै–नै चढ़ती बार ॥४६१॥

गाढ़ैं ठाढ़ैं कुचनु ठिलि पिय–हिय को ठहराइ ।
उकसौंहैं हीं तो हियैं दई सबै उकसाइ ॥४६२॥

दीप उजेरैं हू पतिहिं हरत बसनु रति–काज ।
रही लपटि छबि की छटनु, नैंकी छुटी न लाज ॥४६३॥

लखि दौरत पिय–कर–कटकु बास–छुड़ावन–काज ।
बरुनी–वन गाढ़ैं दृगनु रही गुढ़ौ करि लाज ॥४६४॥

सकुचि सुरत–आरंभ हीं बिछुरी लाज लजाइ ।
ढरकि ढार ढुरि ढिग भई ढीठि ढिठाई आइ ॥४६५॥

सकुचि सरकि पिय–निकट तैं, मुलकि कछुक, तनु तोरि ।
कर आँचर की ओट करि, जमुहानी मुँहु मोरि ॥४६६॥

देह–लग्यौ ढिग गेहपति, तऊ नेहु निरबाहि ।
नीची अँखियनु हीं इतै गई कनखियनु चाहि ॥४६७॥

मार्‌यौ मनुहारिनु भरी, गार्‌यौ खरी मिठाहिं ।
वाकौ अति अनखाहटौ मुसकाहट–बिनु नाहिं ॥४६८॥

नाचि अचानक हीं उठे बिनु पावस बन मोर ।
जानति हौं, नंदित करी यह दिसि नंदकिसोर ॥४६९॥

मैं यह तोहीं मैं लखी भगति अपूरब, बाल ।
लहि प्रसाद–माला जु भौ तनु कदंब की माल ॥४७०॥

जाकैं एकाएक हूँ जग ब्यौसाइ न कोइ ।
सो निदाघ फूलै फरै आकु डहडहौ होइ ॥४७१॥

बतरस–लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ ।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ ॥४७२॥

रही लटू ह्वै लाल, हौं लखि वह बाल अनूप ।
कितौ मिठास दयौ दई इतैं सलोनैं रूप ॥४७३॥

नहिं पावसु, ऋतुराज यह, तजि, तरवर, चित–भूल ।
अपतु भऐं बिनु पाइहै क्यौं नव दल, फल, फूल ॥४७४॥

बन–बाटनु पिक–बटपरा लखि बिरहिनु मत मैंन ।
कुहौ कुहौ कहि कहि उठैं, करि करि राते नैन ॥४७५॥

दिसि दिसि कुसुमित देखियत उपबन–बिपिन–समाज ।
मनहुँ बियोगिनु कौं कियौ सर–पंजर रितुराज ॥४७६॥

टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख–जोति ।
लसति रसोई कैं बगर, जगरमगर दुति होति ॥४७७॥

सोहति धोती सेत मैं कनक–बरन–तन बाल ।
सादर–बारद–बिजुरी–भा रद कीजति, लाल ॥४७८॥

बहु धनु लै, अहसानु कै, पारौ देत सराहि ।
बैद–बधू , हँसि भेद सौं, रही नाह–मुँह चाहि ॥४७९॥

रहौ, गुही बेनी, लखे गुहिबे के त्यौनार ।
लागे नीर चुचान, जे नीठि सुकाए बार ॥४८०॥

मीत, न नीति गलीतु ह्वै जौ धरियै धनु जोरि ।
खाऐं खरचैं जो जुरै, तौ जोरियै करोरि ॥४८१॥

दुरै न निघरघट्यौ दियैं ए रावरी कुचल ।
बिषु सी लागति है बुरी हँसी खिसी की, लाल ॥४८२॥

छले परिबे कैं डरनु सकै न हाथ छुवाइ ।
झझकत हियैं गुलाब कैं झँवा झँवैयत पाइ ॥४८३॥

तिय–सरसौं हैं मुनि किए करि सरसौं हैं नेह ।
धर–परसौं हैं ह्वै रहे झर–बरसौं हैं मेह ॥४८४॥

घन–घेरा छुटि गौ, हरषि चली चहूँ दिसि राह ।
कियौ सुचैनौ आइ जगु सरद–सूरनरनाह ॥४८५॥

पावस–घन अँधियार महि रह्यौ भेदु नहिं आनु ।
रात द्यौस जान्यौ परतु लखि चकई चकवानु ॥४८६॥

अरुनसरोरुह–कर–चरन, दृग–खंजन, मुख–चंद ।
समै आइ सुंदरि सरद काहि न करति अनंद ॥४८७॥

नाहिंन ए पावक–प्रबल, लुवैं चलैं चहुँ पास ।
मानहु बिरह बसंत कैं, ग्रीषम–लेत उसास ॥४८८॥

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ ।
जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ–दाघ निदाघ ॥४८९॥

पग पग मग अगमन परत चरन–अरुनदुति झूलि ।
ठौर ठौर लखियत उठे दुपहरिया से फूलि ॥४९०॥

नीच हियैं दुलसे रहैं गहे गेंद के पोत ।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत ॥४९१॥

ज्यौं ज्यौं बढ़ति बिभावरी, त्यौं त्यौं बढ़त अनंत ।
ओक ओक सबलोक–सुख, कोक–सोक हेमंत ॥४९२॥

रह्यौ मोहु, मिलनौ रह्यौ, यौं कहि गहौं मरोर ।
उत दै सखिहिं उराहनौ इत चितई मो ओर ॥४९३॥

नहिं हरि लौं हियरा धरौ, नहिं हर लौं अरधंग ।
एकत ही करि राखियै अंग अंग प्रति अंग ॥४९४॥

कियौ सबै जगु काम–बस, जीते जिते अजेइ ।
कुसुमसरहिं सर धनुष कर अगहनु गहन न देह ॥४९५॥

छकि रसाल–सौरभ, सने मधुर माधुरी–गंध ।
ठौर ठौर झौंरत झँपत भौंर–झौंर मधु–अंध ॥४९६॥

मिलि बिहरत, बिछुरत मरत, दंपति अति रति–लीन ।
नूतन बिधि हेमन्त सबु जगतु जुराफा कीन ॥४९७॥

पल सोहैं पगि पीक–रँग, छल सोहैं सब बैन ।
बल–सौहैं कत कीजियत ए अलसौंहैं नैन ॥४९८॥

कत लपटइयतु मो गरैं; सो न, जु ही निसि सैन ।
जिहिं चंपक–बरनी किए गल्लाला–रँग नैन ॥४९९॥

नैंक उतै उठि बैठियै, कहा रहे गहि गेहु ।
छुटी जाति नह–दी छिनकु महदी सूकन देहु ॥५००॥

लटुवा लौं प्रभु–कर–गहैं निगुनी गुन लपटाइ ।
वहै गुनी–कर तैं छुटैं निगुनीयै ह्वै जाइ ॥५०१॥

है हिय रहति हई छई, नई जुगति जग जोइ ।
दीठिहिं दीठि लगै, दई, देह दूबरी होइ ॥५०२॥

जज्यौं उझकि झाँपति बदनु, झुकति बिहँसि, सतराइ ।
तत्यौं गुलाल–मुठी झुठी झझकावत प्यौ जाइ ॥५०३॥

छिनकु, छबीले लाल, वह नहिं जौ लगि बतराति ।
ऊख, महूष, पियूष की तौ लगि भूख न जाति ॥५०४॥

अँगुरिनु उचि, भरु भीति दै, उलमि चितै चख लोल ।
रुचि सौं दुहूँ दुहूँनु के चूमे चारु कपोल ॥५०५॥

नागरि, बिबिध बिलास तजि, बसी गवेंलिनु माँहि ।
मूढ़नि मैं गनबी कि तूँ, हूठ्यौ दै इठलाहिं ॥५०६॥

बिथुर्‌यौ जावकु सौति–पग निरखि हँसी गहि गाँसु ।
सलज हँसौंहीं लखि लियौ आधी हँसी उसाँसु ॥५०७॥

मोसौं मिलवति चातुरी, तूँ नहिं भानति भेउ ।
कहे देत यह प्रगट हीं प्रगट्यौ पूस पसेउ ॥५०८॥

सौहैं हूँ हेरयौ न तैं, केती द्‌याई सौंह ।
एहो, क्यौं बैठी किए ऐंटी ग्वैंठी भौंह ॥५०९॥

हीं औरै सी ह्वै गई टरी औधि कैं नाम ।
दूजैं कै डारी खरी बौरी बौरैं आम ॥५१०॥

सही रँगीलैं रति–जगैं पगी सुख चैन ।
अलसौहैं सौहैं कियैं कहैं हँसौहैं नैन ॥५११॥

कहा कुसुम, कह कौमुदी, कितक आरसी जोति ।
जाकी उजराई लखैं आँखि ऊजरी होति ॥५१२॥

पहिरत हीं गोरैं गरैं यौं दौरी दुति, लाल ।
मनौ परसि पुलकित भई बौलसिरी की माल ॥५१३॥

रस–भिजए दोऊ दुहुनु, तउ टिकि रहे, टरैं न।
छबि सौं छिरकत प्रेम–रँगु भरि पिचकारी नैन ॥५१४॥

कारे–बरन डरावने कत आवत इहिं गेह।
कै वा लखी, सखी लखैं लगै थरथरी देह ॥५१५॥

कर के मीड़े कुसुम लौं गई बिरह कुम्हिलाइ।
सदा–समीपिनी सखिनु हूँ नीठि पिछानी जाइ ॥५१६॥

चितवत, जितवत हित हियैं, कियैं तिरीछे नैन।
भीजैं तन दोऊ कँपैं क्यौं हूँ जप निबरैं न ॥५१७॥

कियौ जु, चिबुक उठाइ कै, कंपित कर भरतार।
टेढ़ीयै टेढ़ी फिरति टेढ़ैं तिलक लिलार ॥५१८॥

भौ यह ऐसोई समौ, जहाँ सुखद दुखु देत।
चैत–चाँद की चाँदनी डारति किए अचेत ॥५१९॥

कत कहियत दुखु देन कौं रचि रचि बचन अलीक।
सबै कहाउ रह्यौ लखैं, लाल, महावर लीक ॥५२०॥

लोपे कोपे इंद्र लौं रोपे प्रलय अकाल।
गिरिधारी राखे सबै गो, गोपी, गोपाल ॥५२१॥

ढोरी लाई सुनन की, कहि गोरी मुसकात।
थोरी थोरी सकुचि सौं भोरी भोरी बात ॥५२२॥

आज कछू औरै भए, छए नए ठिकठैन।
चित के हित के चुगल ए नित के होहिं न नैन ॥५२३॥

छुटै न लाज, न लालचौ प्यौ लखि नैहर–गेह।
सटपटात लोचन खरे भरे सकोच, सनेह ॥५२४॥

ह्याँ तैं ह्याँ, तैं इहाँ, नैकौ धरति न धीर।
निसि दिन डाढ़ी सी फिरति बाढ़ी गाढ़ी पीर ॥५२५॥

बिरह–बिकल बिनु ही लिखी पाती दई पठाइ ।
आँक–बिहूनीयौ सुचित सूनैं बाँचत जाइ ॥५२६॥

समरस–समर–सकोच–बस–बिबस न ठिक ठहराइ ।
फिरि फिरि उझकति, फिरि दुरति, दुरि दुरि उझकति आइ ॥५२७॥

फिरत जु अटकत कटनि–बिनु, रसिक, सु रस न, खियाल ।
अनत अनत नित नित हितनु चित सकुचत कत, लाल ॥५२८॥

अरैं परै न, करै हियौ खरैं जरैं पर जार ।
लावत घोरि गुलाब सौं, मलै मिलै घनसार ॥५२९॥

दोऊ चोरमिहीचनी खेलु न खेलि अघात ।
दुरत हियैं लपटाइ कै, छुवत हियैं लपटात ॥५३०॥

मिसि हीं मिसि आतप दुसह दई और बहराइ ।
चले ललन मनभावतिहिं तन की छाँह छिपाइ ॥५३१॥

लहलहाति तन तरु नई लचि लग लौं लफि जाइ ।
लगैं लाँक लोइन–भरी लोइनु लेति लगाइ ॥५३२॥

रही अचल सी ह्वै, मनौ लिखी चित्र की आहि ।
तजैं लाज, डरु लोक कौ, कहौ, बिलोकति काहि ॥५३३॥

पल न चलैं, जकि सी रही, थकि सी रही उसास ।
अबहीं तनु रितयौ, कहौ, मनु पठ्यौ किहिं पास ॥५३४॥

मैं लै दयौ, लयौ सु, कर छुवत छिनकि गौ नीरु ।
लाल, तिहारौ अरगजा उर ह्वै लग्यौ अबीरु ॥५३५॥

चलौ, चलैं छुटि जाइगौ हठु रावरैं सँकोच ।
खरे चढ़ाए हे, ति अब आए लोचन लोच ॥५३६॥

कहे जु बचन बियोगिनी बिरह–बिकल बिललाइ ।
किए न को अँसुआ–सहित सुवा ति बोल सुनाइ ॥५३७॥

छिप्यौ छबीली मुँहु लसै नीलैं अंचर–चीर ।
मनौ कलानिधि झलमलै कालिंदी कैं नीर ॥५३८॥

मानु तमासौ करि रही बिबस बारुनी सेइ ।
झुकति, हँसति; हँसि झुकति, झुकि झुकि हँसि हँसि देइ ॥५३९॥

सदन सदन के फिरन की सद न छुटै, हरिराइ ।
रुचै; तितै बिहरत फिरौ; कत बिहरत उरु आइ ॥५४०॥

प्रलय–करन बरषन लगे जुरि जलधर इकसाथ ।
सुरपति–गरबु हर्‌यौ हरषि गिरिधर गिरि धरि हाथ ॥५४१॥

करे चाह सौं चुटकि कै खरैं उड़ौहैं मैन ।
लाज नवाऐं तरफत, कत खूँद सी नैन ॥५४२॥

ज्यौं ज्यौं आवति निकट निसि, ज्यौं त्यौं खरी उताल ।
झमकि झमकि टहलैं करै लगी रहचटैं बाल ॥५४३॥

रही, पैज कीनी जु मैं; दीनी तुमहिं मिलाइ ।
राखहु चंपकमाल लौं, लाल, हियैं लपटाइ ॥५४४॥

दोऊ चाह–भरे कछू चाहत कह्यौ, कहैं न ।
नहिं, जाँचकु सुनि, सूमलौं बाहिर निकसत बैंन ॥५४५॥

सुभर भर्‌यौ तुवगुन–कननु, पकयौ कपट–कुचाल ।
क्यौं धौं, दारयौ ज्यौ, हयौ दरकतु नाहिंन, लाल ॥५४६॥

चितु दै देखि चकोर–त्यौं, तीजैं भजै न भूख ।
चिनगी चुगै अँगार की, चुगै कि चंद मयूख ॥५४७॥

तुहूँ कहति, हौं आपु हूँ समुझति सबै सयानु ।
लखि मोहनु जौ मनु रहै, तौ मन राखौं मानु ॥५४८॥

धुरवा होहिं न, अलि, उठै धुवाँ धरनि–चहुँकोद ।
जारत आवत जगत कौं पावस–प्रथमपयोद ॥५४९॥

नख–रुचि–चूरनु डारि कै, ठगि लगाइ, निज साथ ।
रह्यौ राखि हठि लै गए हथाहथी मनु हाथ ॥५५०॥

चलत देत आभारु सुनि उहीं परोसिहिं नाह ।
लसी तमासे की दृगनु हाँसी आँसुनु माँह ॥५५१॥

सुरति न ताल न तानन की, उठ्यौ न सुरु ठहराइ ।
एरी, रागु बिगारि गौ बैरी बोलु सुनाइ ॥५५२॥

प्रजर्‌यौ आगि बियोग की, बह्यौ बिलोचन–नीर ।
आठौं जाम हियौ रहै उड्‌यौ उसास–समीर ॥५५३॥

उरु उरुझ्‌यौ चितचोर सौं, गुरु गुरुजन की लाज ।
चढ़ैं हिडोरैं सैं हियैं कियैं बनैं गृह–काज ॥५५४॥

पट सौं पोंछित परी करी, खरी–भयानक–भेष ।
नागिनि ह्वै लागति दृगनु नागबेलि–रँग–रेख ॥५५५॥

तो लखि मो मन जो लही, सो गति कही न जाति ।
ठोड़ी–गाड़ गड़यौ तऊ उड़यौ रहै दिन राति ॥५५६॥

(सोरठा)

मैं लखि नारी–ज्ञानु करि राख्यौ निरधारु यह ।
बहई रोग–निदानु, वहै बैदु, औषधि वहै ॥५५७॥

(दोहा)

जो तिय तुम मनभावती राखी हियैं बसाइ ।
मोहिं झुकावति दृगनु ह्वै वहई उझकति आइ ॥५५८॥

दोऊ अधिकाई–भरे एकैं गौं गहराइ ।
कौनु मनबै, कौ मनै, माने मन ठहराइ ॥५५९॥

उर लीनै अति चटपटी, सुनि मुरली–धुनि, धाइ ।
हौं निकसी हुलसी, सु तौ गौ हुल सी हिय लाइ ॥५६०॥

ब्रजबासिनु कौं उचित धनु, जो धन रुचित न कोइ ।
सु चित न आयौ; सुचितई, कहौ, कहाँ तैं होइ ॥५६१॥

हठु न हठीली करि सकैं यह पावस–ऋतु पाइ ।
आन गाँठि घुटि जाइ, त्यौं मान–गाँठि छुटि जाइ ॥५६२॥

वेऊ चिरजीवी, अमर निधरक फिरौ कहाइ ।
छिनु बिछुरैं जिनकी नहीं पावस आइ सिराइ ॥५६३॥

भेटत बन न भावतौ, चितु तरसतु अति प्यार ।
धरति लगाइ लगाइ उर भूषन, बसन, हथ्यार ॥५६४॥

वाही दिन तैं मिट्यौ मानु, कलह कौ मूलु ।
भलैं पधारे, पाहुने, ह्वै गुड़हर कौ फूलु ॥५६५॥

मोहिं लजावत, निलज ए हुलसि मिलत सब गात ।
भानु–उदै की ओस लौं मानु न जानति जात ॥५६६॥

(सोरठा)

तो तन अबधि–अनूप रूपु लग्यौ सब जगत कौ ।
मो दृग लागे रूप, दृगनु लगी अति चटपटी ॥५६७॥

रहैं निगोड़े नैन डिगि, गहैं न चेत अचेत ।
हौं कसु कै रिस के करौं, ये निसुके हँसि देत ॥५६८॥

मोहूँ सौं बातनु लगैं लगी जीभ जिहिं नाइ ।
सोई लै उर लाइयै, लाल, लागियतु पाइ ॥५६९॥

नावक–सर से लाइ कै, तिलकु तरुनि इत ताँकि।
पावक–उर सी झमकि कै, गई झरोखा झाँकि॥५७०॥

सुख सौं बीती सब निसा, मनु सोए मिलि साथ ।
मूका मेलि गहे, सु छिनु हाथ न छोड़े हाथ ॥५७१॥

बाम बाँह, फरकति, मिलैं जौ हरि जीवनमूरि ।
तौ तोहीं सौं भेटिहौं राखि दाहिनी दूरि ॥५७२॥

छुटे छुटावत जगत तैं सटकारे, सुकुमार ।
मनु बाँधत बेनी–बँधे नील, छबीले बार ॥५७३॥

इहीं बसंत न खरी, अरी, गरम न सीतल बात ।
कहि, क्यौं झलके देखियत पुलक, पसीजे गात ॥५७४॥

चित पितमारक–जोगु गनि भयौ, भयैं सुत, सोगु ।
फिरि हुलस्यौ जिय जोड़सी समुझैं जारज–जोगु ॥५७५॥

चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट–पट झीन ।
माहुँ सुरसरिता–बिमलजल उछरत जुग मीन ॥५७६॥

रहि मुँहु फेरि कि हेरि इत; हित–समहौ चितु, नारि ।
डीठि–परस उठि पीठि के पुलके कहैं पुकारि ॥५७७॥

बिछुरैं जिए , सकोच इहिं बोलत बनत न बैन ।
दोऊ लगे हियैं किए लजौहैं नैन ॥५७८॥

मोहिं करत कत बावरी, करैं दुराउ दुरैंन ।
कहे देत रँग राति के रँग–लिचुरत से नैन ॥५७९॥

छिपैं छिपाकर छिति छुवैं तम ससिहरि न, सँभारि ।
हँसति हँसति चलि, ससिमुखी, मुख तैं आँचरु टारि ॥५८०॥

अपनैं अपनैं मत लगे बादि मचावत सोरु ।
ज्यौं त्यौं सबकौं सेइबौ एकै नंदकिसोरु ॥५८१॥

लहि सूनैं घर करु गहत दिठादिठी की ईठि ।
गड़ी सु चित नाहीं करति करि ललचौंहीं डीठि ॥५८२॥

पिय कैं ध्यान गही गही रही वही ह्वै नारि ।
आपु आपु हीं आरसी लखि रीझति रिझवारि ॥५८३॥

बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु ।
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि गनैं लोग उतपातु ॥५८४॥

मरिबे कौ साहसु ककै बढ़ैं बिरह की पीर ।
दौरति ह्वै समुही ससी, सरसिज, सुरभि–समीर ॥५८५॥

कब की ध्यान–लगी लखौं, यह धरु लगिहै काहि ।
डरियतु भृंगी–कीट लौं मति बहई ह्वै जाइ ॥५८६॥

बिलखी लखै खरी खरी भरी अनख, बैराग ।
मृगनैनी सैन न भजै लखि बेनी के दाग ॥५८७॥

अनियारे, दीरघ दृगनु किती न सरुनि समान ।
वह चितवनि औरै कछू , जिहिं बस होत सुजान ॥५८८॥

झुकि झुकि झपकौं हैं पलनु, फिरि फिरि जुरि, जमुहाइ ।
बींदि पिआगम, नींद–मिसि, दीं सब अली उठाइ ॥५८९॥

ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगौ सतर ह्वै गैन ।
दीरघ होहिं न नैंक हूँ फारि निहारैं नैन ॥५९०॥

गह्यौ अबोलौ बोलि प्यौ आपुहिं पठै बसीठि ।
दीठि चुराई दुहुनु की लखि सकुचौंहीं दीठि ॥५९१॥

दुखाहाइनु चरचा नहीं आनन आनन आन ।
लगी फिरैं ढूका दिए कानन कानन कान ॥५९२॥

हितु करि तुम पठयौ, लगैं वा बिजना की बाइ ।
टली तपति तन की, तऊ चली पसीना–न्हाइ ॥५९३॥

ध्यान आनि ढिग प्रानपति रहति मुदित दिन राति ।
पलकु कँपति, पुलकति पलकु , पलकु पसीजति जाति ॥५९४॥

सकै सताइ न तुम बिरहु, निसि दिन सरस, सनेह ।
रहै वहै लागी दृगनु दीपसिखा सी देह ॥५९५॥

बिरह–जरी लखि जीगननु कह्यौ न डाहि कै बार ।
अरी, आउ भजि भीतरी, बरसत आजु अँगार ॥५९६॥

फिरि घर कौं नूतन पथिक चले चकित–चित भागि ।
फूल्यौ देखि पलासु बन, समुही समुझि दवागि ॥५९७॥

गड़ी कुटुम की भीर मैं रही बैठि दै पीठि ।
तऊ पलकु परि जाति इत सलज, हँसौंही डीठि ॥५९८॥

नाउँ सुनत हीं ह्वै गयौ तनु औरै, मनु और ।
दबै नहीं चित चढ़ि रह्यौ अबै चढ़ायें त्यौर ॥५९९॥

दुसह सौति–सालैं, सु हिय गुनति न नाह–बियाह ।
धरे रूप गुन कौ गरबु फिरैं अछेह उछाह ॥६००॥

डिगत पानि डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बेहाल ।
कंपि किसोरी दरसि कै , खरैं लजाने लाल ॥६०१॥

और सबै हरसी हँसतिं, गावतिं भरी उछाह ।
तुँहीं, बहू , बिलखी फिरै क्यौं देवर कैं ब्याह ॥६०२॥

बाल छबीली तियनु मैं बैठी आपु छिपाइ ।
अरगट हीं पानूस सी परगट होति लखाइ ॥६०३॥

एरी, यह तेरी, दई, क्यौं हूँ प्रकृति न जाइ ।
नेह–भरैं हिय राखियै, तउ रूखियै लखाइ ॥६०४॥

इहिं काँटैं मो पाइ गड़ि लीनी मरति जिवाई ।
प्रीति जनावत भीति सौं मीत जु काढ़यौ आइ ॥६०५॥

नाँक चढ़ै सीबी करै जितै छबीली छैल ।
फिरि फिरि भूलि वहै गहै प्यौ कँकरीली गैल ॥६०६॥

नटि न, सीस साबित भई लुटी सुखनु की मोट ।
चुप करि ए चारी करति सारी–परी सलोट ॥६०७॥

जिहिं भामिनी भूषनु रच्यौ चरन–महावर भाल ।
उहीं मनौ अँखियाँ रँगीं ओठनु कैं रँग, लाल ॥६०८॥

तूँ मोहन–मन गड़ि रही गाढ़ी गड़नि, गुबालि ।
उठै सदा नटसाल ज्यौं सौतिनु कैं उर सालि ॥६०९॥

लाज–लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं ।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं ॥६१०॥

कर–मुँदरी की आरसी, प्रतिबिंबित प्यौ पाइ ।
पीठि दियैं निधरक लखै, इकटक डीठि लगाइ ॥६११॥

इती भीर हूँ भेदि कै, कित हूँ ह्वै, इत आइ ।
फिरै डीठि जुरि डीठि सौं सबकी डीठि बचाइ ॥६१२॥

लाई, लाल बिलोकियै, जिय की जीवन–मूलि ।
रही भौन के कोन मैं सोनजुही सी फूलि ॥६१३॥

ओठु ऊँचै, हाँसी–भरी दृग भौंहनु की चाल ।
मो मनु कहा न पी लियौ, पियत तमाकू , लाल ॥६१४॥

जे तब होत दिखादिखी भईं अमी इक आँक।
दगैं तिरीछी डीठि अब ह्वै बीछी कौ डाँक ॥६१५॥

नैंकौ उहिं न जुदी करी, हरषि जु दी तुम माल ।
उर तैं बासु छुट्यौ नहीं बास छुटैं हूँ , लाल ॥६१६॥

बिहँसि बुलाइ, बिलोक उत प्रौढ़ तिया रस घूमि ।
पुलकि पसीजति, पूत कौ पिय–चूम्यौ मुँहु चूमि ॥६१७॥

देख्यौ अनदेख्यौ कियौं, अँगु अँगु सबै दिखाइ ।
पैठति सी तन मैं सकुचि बैठी चितै लजाइ ॥६१८॥

पटु पाँखै, भखु काँकरै, सपर परेई संग ।
सुखी, परेवा, पुहुमि मैं एकै तुँहीं, बिहंग ॥६१९॥

अरे, परेखी कौ करै, तुँहीं बिलोकि बिचारि ।
किहिं नर, किहिं सर राखियै खरैं बढ़ैं परिपारि ॥६२०॥

तौ, बलियै, भलिये बनी, नागर नंदकिसोर ।
जौ तुम नीकैं के लख्यौ मो करनी की ओर ॥६२१॥

चाह भरीं, अति रस भरीं, बिरह भरीं सब बात ।
कोरि सँदेसे दुहुनु के चले, पौरि लौं जात ॥६२२॥

सुनि पग–धुनि चितई इतै न्हाति दियैं हीं पीठि ।
चकी, झुकी, सकुची, डरी, हँसी लजी सी डीठि ॥६२३॥

कर लै, सूँघि सराहि कै हूँ रहे सबै गहि मौनु ।
गंधी अंध, गुलाब कौ गँवई गाहकु कौनु ॥६२४॥

मिलि चलि, चलि मिलि, मिलि चलत आँगन अथयौ भानु ।
भयौ मुहूरत भोर कौ पौरिहिं प्रथमु मिलानु ॥६२५॥

पचरँग–रँग–बेंदी खरी उठै ऊगि मुख–जोति ।
पहिरैं चीर चिनौटिया चटक चौगुनी होति ॥६२६॥

हँसि ओठनु–बिच, करु उचै, कियैं निचौहैं नैन ।
खरैं अरैं प्रिय कैं प्रिया लगी बिरी मुख दैन ॥६२७॥

वारौं, बलि, तो दृगनु पर अलि, खंजन, मृग, मीन ।
आधीडीठि–चितौनि जिहिं किए लाल आधीन ॥६२८॥

जात सयान अयान ह्वै, वै ठग काहि ठगैंन ।
को ललचाइ न लाल के लखि ललचौहैं नैन ॥६२९॥

लखि लखि अँखियनु, अधखुलिनु आँगु मोरि, अँगराइ ।
आधिक उठि, लेटति लटकि, आलस–भरी जम्हाइ ॥६३०॥

प्रेम अडोलु डुलै नहीं मुँह बोलैं अनखाइ ।
चित उनकी मूरति बसी, चितवनि माँहि लखाइ ॥६३१॥

नाक मोरि, नाहीं ककै नारि निहोरैं लेइ ।
छुवत ओठ बिय आँगुरिनु बिरी बदन प्यौ देइ ॥६३२॥

गिरै कंपि कछु, कछु रहै कर पसीजि लपटाइ ।
लैयौ मुठी गुलाल भरि छुटत झुठी ह्वै जाइ ॥६३३॥

देखत कछु कौतिगु इतै; देखौ नैंक निहारि ।
कब की इकटक डटि रही टटिया अँगुरिनु फारि ॥६३४॥

कर लै, चूमि चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेटि ।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति धरति समेटि ॥६३५॥

चकी जकी सी ह्वै रही, बूझ बोलति नीठि ।
कहूँ डीठि लागी, लगी कै काहू की डीठि ॥६३६॥

भावरि–अनभावरि करौ कोरि बकवादु ।
अपनी अपनी भाँति कौ छुटै न सहजु सवादु ॥६३७॥

दूरयौ खरे समीप कौ लेत मानि मन मोदु ।
होत दुहुनु के दृगनु हीं बतरसु, हँसी–बिनोदु ॥६३८॥

मुखु उघारि पिउ लखि रहत रह्यौ न गौ मिस–सैन ।
फरके ओठ, उठे पुलक, गए उघरि जुरि नैन ॥६३९॥

पिय–मन रुचि–ह्वैबौ कठिनु, तन–रुचि होहु सिंगार ।
लाखु करौ, आँखि न बढ़ैं बढ़ैं बढ़ाऐं बार ॥६४०॥

मनमोहन सौं मौहु करि, तूँ घनस्यामु निहारि ।
कुंजबिहारी सौं बिहरि, गिरधारी उर धारि ॥६४१॥

मैं मिसहा सोयै समुझि, मुँहु चूम्यौ ढिग जाइ ।
हँस्यौ, खिसानी, गल गह्यौ, रही गरैं लपटाइ ॥६४२॥

नीठि नीठि उठि बैठि हूँ प्यौ प्यारी परभात ।
दोऊ नींद भरैं खरैं, गरैं लागि, गिरि जात ॥६४३॥

तनक झूठ न सवादिली कौन बात परि जाइ ।
तिय–मुख रति–आरंभ की नहिं झूठियै मिठाइ ॥६४४॥

नहिं अन्हाइ, नहिं जाइ घर, चितु चिहुँट्यौ तकि तीर ।
परसि, फुरहरी लै फिरति बिहँसति, धँसति न नीर ॥६४५॥

सटपटाति सैं ससिमुखी मुख घूँघट–पटु ढाँकि।
पावक–झर सी झमकि कै गई झरोखा झाँकि॥६४६॥

ज्यौं कर , त्यौं चिकुटी चलति; त्यौं चिकुटी, त्यौं नारि ।
छबि सौं गति सी लै चलति चातुर कातन–हारि ॥६४७॥

बुधि अनुमान, प्रमान श्रुति किऐं नीठि ठहराइ ।
सूछम कटि पर ब्रह्म की अलख, लखी नहिं जाइ ॥६४८॥

खिचैं मान अपराध हूँ चलि गै बढ़ैं अचैन ।
जुरत डीठि, तजि रिस खिसी, हँसे दुहुनु के नैन ॥६४९॥

रूप–सुधा–आसव छक्यौ, आसव पियत बनै न ।
प्यालैं ओठ, प्रिया–बदन, रह्यो लगाऐं नैन ॥६५०॥

यौं दलमलियतु , निरदई, दई, कुसुम सौ गातु ।
करु धरि देखौ, धरधरा उर कौ अजौं न जातु ॥६५१॥

किती न गोकुल कुलबधू , किहिं न काहिं सिख दीन ।
कौनैं तजी कुल–गली ह्वै मुरली–सुर–लीन ॥६५२॥

खलित बचन, अधखुलित दृग, ललित स्वेद–कन–जोति ।
अरुन बदन छबि मदन की खरी छबीली होति ॥६५३॥

बहकि न इहिं बहिनापुली, जब तब, बीर बिनासु ।
बचै न बड़ी सबील हूँ चील–घोंसुवा माँसु ॥६५४॥

लहि रति–सुखु लगियै हियैं लखी लजौंहीं नीठि ।
खुलति न, मो मन बंधि रही वहै अधखुली डीठि ॥६५५॥

कियौ सयानी सखिनु सौं, नहिं सयानु यह, भूल ।
दुरै दुराई फूल लौं क्यौं पिय–आगम–फूल ॥६५६॥

आयौ मीतु बिदेस तै काहू कह्या पुकारि ।
सुनि हुलसीं, बिहँसीं, हँसीं दोऊ दुहुनु निहारि ॥६५७॥

जद्यपि सुंदर , सुघर , पुनि सगुनौ दीपक–देह ।
तऊ प्रकासु करै तितौ, भरियै जितैं सनेह ॥६५८॥

पलनु प्रगटि , बरुनीनु बढ़ि, नहिं कपोल ठहरात ।
अँसुवा परि छतिया, छिनकु छनछनाइ, छिपि जात ॥६५९॥

फिरि सुधि दै, सुधि द्याइ प्यौ, इहिं निरदई निरास ।
नई नई बहुर्‌यौ, दई ! दई उसासि उसास ॥६६०॥

समै–पलट पलटै प्रकृति, को न तजै निज चाल ।
भौ अकरुन करुनाकरौ इहिं कपूत कलिकाल ॥६६१॥

पार्‌यौ सोरु सुहाग कौ इनु बिनु हीं पिय–नेह ।
उनदौंहीं अँखियाँ ककै , कै अलसौंहीं देह ॥६६२॥

इनु दुखिया आँखियानु कौं सुखु सिरज्यौई नाँहिं ।
देखैं बनै न देखतै, अनदेखैं अकुलाँहिं ॥६६३॥

लगी अनलगी सी जु बिधि करी खरी कटि खीन ।
किए मनौ वैं हीं कसर कुच, नितंब अति पीन ॥६६४॥

छिनकु उधारति, छिनु छुवति, राखति छिनकु छिपाइ ।
सबु दिनु पिय–खंडित अधर दरपन देखत जाइ ॥६६५॥

मुँहु पखारि मुड़हरु भिजै, सीस सजल कर छ्वाइ ।
मौरु उचै घूँटेनु तैं नारि सरोबर न्हाइ ॥६६६॥

कोटि जतन कोऊ करौ, तन की तपनि न जाइ ।
जौ लौं भीजे चीर लौं रहै न प्यौ लपटाइ ॥६६७॥

चटक न छाँड़तु घटत हूँ सज्जन–नेहु गँभीरु ।
फीकौ परै न, बरु फटै, रँग्यौ चोल–रँग चीरु ॥६६८॥

दुसह बिरह दारुन दसा, रहै न और उपाइ ।
जात जात ज्यौ राखियतु प्यौ कौ नाउँ सुनाइ ॥६६९॥

फिरि फिरि दौरत देखियत, निचले नैंक रहैंन ।
ए कजरारे कौन पर करत कजाकी नैन ॥६७०॥

को छूट्यौ इहि जाल; परि, कत, कुरंग, अकुलात ।
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत, त्यौं त्यौं उरझत जात ॥६७१॥

अब तजि नाउँ उपाय कौ, आए पावस–मास ।
खेलु न रहिबौ खेम सौं केम–कुसुम की बास ॥६७२॥

लसै मुरासा तिय–स्त्रवन यौं मुकतनु दुति पाइ ।
मानहु परस कपोल कैं रहे स्वेद–कन छाइ ॥६७३॥

मिलि परछाँहीं जोन्ह सौं रहे दुहुन के गात ।
हरि राधा इक संग हीं चले गली महिं जात ॥६७४॥

बिधि, बिधि कौन करै , टरै नहीं परैं हूँ पानु ।
चितै कितै त लै धर्‌यौ इतैं तन मानु ॥६७५॥

मोरचंद्रिका, स्याम–सिर चढ़ि कत करित गुमानु ।
लखिवी पाइनु पर लुठति, सुनियतु राधा–मानु ॥६७६॥

चिरजीवौ जोरी, जुरै क्यों न स्नेह गँभीर ।
को घटि; ए वृषभानुजा, वे हलधर के बीर ॥६७७॥

औरै गति, औरै बचन, भयौ बदनु–रँगु औरु ।
द्योसक तैं पिय–चित चढ़ी कहैं चढ़ैं हूँ त्यौरु ॥६७८॥

बेंदी भाल, तँबोल मुँह, सीस सिलसिले बार ।
दृग आँजे, राजै खरी एई सहज सिंगार ॥६७९॥

अंग अंग प्रतिबिंब परि दरपन सैं सब गात ।
दुहरे, तिहरे, चौहरे, भूषन, जाने जात ॥६८०॥

सघनकुंज–छाया सुखद सीतल सुरिभि–समीर ।
मनु ह्वै जातछ अजौं वहै उहि जमुना के तीर ॥६८१॥

मोहिं भरौसौ, रीझिहै उझकि झाँकि इक बार ।
रूप–रिझाबनहारु वह, ए नैना रिझबार ॥६८२॥

भौंहनु त्रासति, मुँह नटति, आँखिनु सौं लपटाति ।
ऐंचि छुड़ावति करु, इँची आगैं आवति जाति ॥६८३॥

रुक्यौ साँकर कुंज–मग, करतु झाँझि, झकुरातु ।
मंद मंद मारुत–तुरँगु खूँदतु आवतु जातु ॥६८४॥

जदपि लौंग ललितौ, तऊ तूँ न पहिरि इक आँक।
सदा साँक बढ़ियै रहै, रहै चढ़ी सी नाक ॥६८५॥

बरजैं दूनी हठ चढ़ै, ना सकुचै, न सकाइ ।
टूटत कटि दुमची–मचक, लचकि लचकि बचि जाइ ॥६८६॥

कर समेट कच भुज उलटि, खऐं सीस–पट टारि ।
काकौ मनु बाँधै न यह जूरा–बाँधनहारि ॥६८७॥

पूछैं क्यौं रूखी परति, सगिबगि गई सनेह ।
मनमोहन–छबि पर कटी, कहै कँट्यौनी देह ॥६८८॥

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात ।
मनौ नीलमनि–सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात ॥६८९॥

भाल लाल बेंदी, लालन, आखत रहे बिराजि ।
इंदुकला कुज मैं बसी मनौ राहु–भय भाजि ॥६९०॥

अंग अंग छबि की लपट उपटति जाति अछेह ।
खरी पातरीऊ, तऊ लगै भरी सी देह ॥६९१॥

दृग थिरकौहैं, अधखुलैं, देह थकौंहैं ढार ।
सुरत सुखित सी देखियत, दुखित गरभ कैं भार ॥६९२॥

बिहँसति, सकुचति सी, दिऐं कुच–आँचर–बिच बाँह ।
भीजैं पट तट कौं चली, न्हाइ सरोवर माँह ॥६९३॥

बरन, बास, सुकुमारता, सब बिधि रही समाइ ।
पँखुरी लगी गुलाब की गात न जानी जाइ ॥६९४॥

रंच न लखियति पहिरि यौं कंचन सैं तन, बाल ।
कुँभिलानैं जानी परै उर चंपक की माल ॥६९५॥

गोधन, तूँ रहष्यौ हियैं धरियक लेहि पुजाइ ।
समुझि परैगी सीस पर परत पसुनु के पाइ ॥६९६॥

मुँह धोवति, एड़ी घसति, हसति, अनगवति तीर ।
धसति न इंदीबरनयनि कालिंदी कैं नीर ॥६९७॥

बढ़त निकसि कुच–कोर–रूचि, कढ़त गौर भुजमूल ।
मनु लुटि गौ लोटनु चढ़त, चोंटत ऊँचे फूल ॥६९८॥

अहे, दहेंड़ी जिनि धरै, जिनि तूँ लेहि उतारि ।
नीकैं है छींकैं छुवै, ऐसै ई रहि, नारि ॥६९९॥

न्हाइ, पहिरि पटु डटि, कियौ बेंदी–मिसि परनामु ।
दृग चलाइ घर कौं चली बिदा किए घनस्यामु ॥७००॥

ज्यौं ह्वैहौं, त्यौं होउँगी हौं, हरि, अपनी चाल ।
हठु न करौ, अति कठिनु है मो तारिबौ, गुपाल ॥७०१॥

परसत पोंछत लखि रहतु, लगि कपोल कैं ध्यान ।
कर लै प्यौ पाटल, बिमल प्यारी–पठाए पान ॥७०२॥

बामा, भामा, कामिनी, कहि बोलौ प्रानेस ।
प्यारी कहत खिसात नहिं पावस चलत बिदेस ॥७०३॥

उठि, ठकु ठकु, एतौ कहा पावस कैं अभिसार।
जानि परैगी देखियौ दामिनि घन–अँधियार ॥७०४॥

कैवा आवत इहिं गली रहौं चलाइ, चलैं न।
दरसन की साधै रहै, सूधे रहैं न नैन ॥७०५॥

बेसरि–मोती, धनि तहीं; को बूझै कुल, जाति।
पीबौ करि तिय–ओठ कौ रसु निधरक दिन राति ॥७०६॥

तिय–मुख लखि हीरा–जरी बेंदी बढ़ैं बिनोद।
सुत–सनेह मानौ लियौ बिधु पूरन बुधु बोद ॥७०७॥

गोरी गदकरी परैं हँसत कपोलनु गाड़।
कैसी लसति गवाँरि यह सुनकिरवा की आड़ ॥७०८॥

जौ लौं लखौं न, कुल–कथा तौ लौं ठिक ठहराइ।
देखैं आवत देखि हीं, क्यौं हूँ रह्यौ न जाइ ॥७०९॥

सामाँ सेन, सयान को सबै साहि कैं साथ।
बाहुबली जयसाहिजू, फते तिहारैं हाथ ॥७१०॥

यों दल काढ़े बलक तैं तैं, जयसिंह भुवाल।
उदर अघासुर कैं परैं ज्यौं हरि गाइ, गुवाल ॥७११॥

घर घर तुरकिनि हिंदुनी देति असीस सराहि।
पतिनु राखि चादर, चुरी तैं राखी, जयसाहि ॥७१२॥

हुकुम पाइ जयसाहि कौ, हरि–राधिका–प्रसाद।
करी बिहारी सतसई भरी अनेक संवाद ॥७१३॥

किसी ने इन दोहों के बारे में कहा है:

सतसइया के दोहरा ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर ॥